SACH KI DASTAK, RNI : UPHIN/2017/75716
वाराणसी से प्रकाशित

वर्ष : 5, अंक : 10, जनवरी 2022
मूल्य : 20 रु.

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

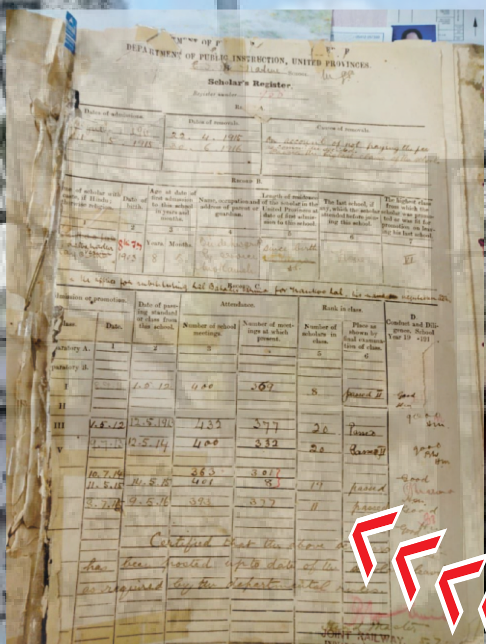
DEPARTMENT OF PUBLIC INSTRUCTION, UNITED PROVINCES
Scholar's Register

अनसुलझी गुत्थी
शास्त्री जी

कलम इनकी जय बोल!

यूपी में चुनावी शंखनाद

मालदीव में भारत-विरोधी आंदोलन

भारतीय जनता पाटी जिन्दाबाद

अनिल गुप्ता

380 विधानसभा - पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली

मिशन 2022

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

चंद्रेश्वर जायसवाल

प्रदेश मंत्री-उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल
महामंत्री- रामनगर आद्योगिक एसोसिएशन
अध्यक्ष-परिवर्तन सेवा समिति
पूर्व लोकसभा प्रभारी बसपा चन्दौली

पता-चकिया मोड़ पं दीनदयाल नगर, जनपद चन्दौली

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

मुलायम सिंह यादव उर्फ डब्लू
जिला पंचायत सदस्य,
सकलडीहा

बाबूलाल यादव
पूर्व ब्लॉक प्रमुख
नियामताबाद विकास खण्ड, चन्दौली

रामकिशुन यादव
पूर्व सांसद,
चन्दौली

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

Mr Ajoy Calla & Mrs Jaya Calla

Chief manager
ICICI Bank
506 Mahavir nagar, Behind Ram Mandir
Jaipur - 302018

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 05, अंक : 10, जनवरी 2022

संरक्षक
इन्दू भूषण कोचगवे
संपादक
ब्रजेश कुमार
समाचार संपादक
आकांक्षा सक्सेना
खेल सम्पादक
मनोज उपाध्याय
उप सम्पादक
शिव मोहन सिंह
कानूनी सलाहकार
दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)
प्रूफ रीडर
बिपिन बिहारी उपाध्याय
प्रसार प्रभारी
अशोक सैनी
प्रसार सह प्रभारी
अजय राय
अशोक शर्मा
जितेन्द्र सिंह
ग्राफिक्स
संजय सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,
चेतगंज वाराणसी
पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)
म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)
मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक है।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी टोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।

स्टेट ब्यूरो प्रभारी

1- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
2- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
3- देवेन्द्र कुमावत - राजस्थान
4- दीपाली सोढ़ी - असम
5- प्रभाकर कुमार - बिहार
6- दीपक कुमार साहा - दिल्ली

ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

1- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
2- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी)
3- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी)
4- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी)
5- प्रमोद शुक्ला जिला प्रभारी बाँदा (यू.पी)
6- प्रतीक राय जिला प्रभारी गाजीपुर (यू.पी)
7- विनीत कुमार रिपोर्टर पीडीडीयू (यू.पी)
8- डिम्पल सानन, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखंड)

सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/-(डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak
A/c. No. : 13751652000024
IFSC Code : PUNB0137510
Panjab National Bank

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

इस बार

क्र.स.	लेख	पेज न.
1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर : स्वामी विवेकानंद	05
3.	अनसुलझी गुत्थी शास्त्री जी- ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	06
4.	कलम इनकी जय बोल बोल - कृष्णकांत श्रीवास्तव	13
5.	यूपी चुनाव का शंखनाद - आकांक्षा सक्सेना, न्यूज ऐडीटर	20
6.	दुनिया का सबसे ऊंची रणभूमि : सियाचिन - राकेश प्रताप सिंह	25
7.	ढाई आखर - संजय भारद्वाज	27
8.	डिजिटल युग में बढ़ता विद्वेष का दायरा- सोनम लववंशी	29
9.	पति-पत्नी और वो - जयश्री बिरमी	32
10.	अंतिम फैसला - डॉ. रमेश यादव	34
11.	भाग्यशाली लोग - डॉ. प्रमोद शुक्ल, अकोला	37
12.	नववर्ष के अभिनंदन में, आओ उगायें फसल प्यार की- अलका अग्रवाल	38
13.	नववर्ष का आगमन - कवि अरुण चक्रवर्ती	39
14.	श्री लाल बहादुर शास्त्री जी - मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी	40
15.	दिल कर रहा था पकड़ लूं उन लम्हों को - ग़ौसिया निशात	41
16.	नशा न करना तुम यारों - सुन्दर लाल मेहरानियाँ	42
17.	रातें हुईं पहाड़ - श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'	43
18.	चाय और सृजनधर्मी - दिनेश विजयवर्गीय	44
19.	ज़ायका : गज़क - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	45
20.	2021 की उपलब्धियां-सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	47
21.	आखिर! क्यों नहीं चाहते विदेशी कोच- मनोज उपाध्याय, स्पोर्ट्स एडीटर	53
22.	मालदीव में भारत-विरोधी आंदोलन?सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	54
23.	फिल्म 'राधे श्याम' की रिलीज रूकी - सच की दस्तक न्यूज नेटवर्क	56

संपादकीय

नववर्ष के अवसर पर सभी पाठकों, शुभचिंतकों व मेरे सहयोगीयों को हार्दिक बधाई व शुभकामना।

दोस्तों नए वर्ष का आगमन कोरोना के नए संक्रमण के साथ हुआ है जो शुभ संकेत तो नहीं है। अब यह आवश्यक हो जाता है कि स्वयं इस महामारी से बचें और लोगों को भी जागरूक कर उन्हें बचायें।

इस वर्ष 2022 के मार्च में ङसच की दस्तकङ 5 वर्ष की यात्रा पूरी कर लेगा। इस सफर को सफलता पूर्वक तय करने में हमारे पाठकों, लेखकों का बहुत बड़ा योगदान है। इसके लिए हम सबके आभारी है।

जनवरी 2022 के अंक में **सच की दस्तक** देश के दो वीर सपूतों के बारे में अपना दृष्टिकोण रख रहा है और देश की वर्तमान सरकार से आग्रह भी कर रहा है कि इनकी मौत की रहस्यमय गुत्थियों को सुलझाएं।

जी हाँ, मैं जिक्र कर रहा हूँ देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी की और 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा' जैसा जोशीला नारा देने वाले सुभाषचंद्र बोस की। दोनों की मौत की गुत्थी आज तक सुलझ नहीं सकी है ।लेकिन ऐसा क्यों है हम सब भारत वासियों के समझ से परे है।

देश के सबसे कर्मवीर, ईमानदार छवि में सुमार पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जिनका जन्म मुगलसराय में हुआ लेकिन सरकार ने उन्हें भुला दिया। मैं इसलिए बोल रहा हूँ क्योंकि जन्मस्थान पर कुछ है ही नहीं।केवल एक मूर्ति लगी है उसे भी सरकार ने नहीं लगाई है बल्कि इस जन्मस्थली के लिए संघर्ष कर रहे लोगों ने दुनिया से छिपकर रात के अंधेरे में अर्द्ध रात्रि की बेला में लगाई, क्योंकि उन संघर्षरत लोगों को डर था कि उन्हें पकड़ कर जेल में न डाल दिया जाये।

एक स्वतंत्र राष्ट्र में यह डर क्यों ? अपने प्रधानमंत्री की मूर्ति न लगा सकें। इतिहासकारों ने भी बिना विवाद के माना है कि पूर्व प्रधानमंत्री का जन्म मुगलसराय में हुआ था। ऐसे में सरकार को इसपर ध्यान देना ही चाहिए था, लेकिन ऐसा अभी तक नहीं हुआ है। ये क्यों है? यही यक्ष प्रश्न है । आखिर कहीं तो मुगलसराय में उनका जन्म हुआ होगा। उसे खोजना चाहिए था और उनकी स्मृति में संग्रहालय बनाना चाहिए था। इस बात पर अब राजनीतिक खेमेबाजी शुरू है जो मेरी समझ से पूरी तरह गलत और निराधार है। जय जवान जय किसान का नारा देने वाले इस महापुरुष ने पूर्वमध्य रेलवे इंटर कॉलेज मुगलसराय में ही अध्ययन किया था। उसका प्रमाण मैं स्वयं स्थानांतरण सर्टिफिकेट के रूप में एक आर्टिकल के जरिए इसी अंक में दे रहा हूँ। जिससे यह प्रमाणित होता है कि उन्होंने अपना बचपन का अध्ययन केंद्र रेलवे इंटर कॉलेज को ही बनाया था जो उस समय एक प्राइमरी स्कूल था। शायद इससे भी सरकार की आंखें खुले क्योंकि ये ठोस प्रमाण है। सुना है रेलवे इंटर कॉलेज को केंद्र सरकार ने बंद करने का फैसला लिया है। यदि वास्तव में सरकार ऐसा करती है तो जो धरोहर लाल बहादुर शास्त्री जी की रही है वो भी सदा के लिए समाप्त हो जाएगी। सच की दस्तक के माध्यम से देश के माननीय प्रधानमंत्री जी से मेरा विनम्र निवेदन है कि पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की स्मृति को कम से कम छोड़ दिया जाए भले ही केन्द्रीय विद्यालय संगठन या राज्य सरकार के आधीन इस विद्यालय को चलाया जाए। यह तो पूर्णरूपेण प्रमाणित है कि लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म मुगलसराय में ही हुआ है इसलिए उनकी स्मृति में एक संग्रहालय बनाने के लिए उनके जन्मस्थली को ही चुना जाना चाहिए।

दोस्तों, आज देश पर एक बार फिर कोरोना का खतरा

मंडरा रहा है।कोरोना वायरस का नया वैरिएंट ओमिक्रान आ गया जो अब डराने लगा है। साथ ही डेल्टा वैरिएंट के केस भी तेजी से बढ़ रहे है। हमारी केंद्र सरकार ने वैक्सिनेशन कार्य को तेज कर दिया है। 150 सौ बिलियन डोज हम लोगों को दे दिया गया है और बच्चों का वैक्सिनेशन भी प्रारम्भ कर दिया गया है। इसका श्रेय देश के वैज्ञानिकों के साथ देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को देना चाहिए। लेकिन डर हमें उन लोगों से है जिन्होनें वैक्सीन की एक भी डोज नहीं ली है। सच की दस्तक के माध्यम से मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि कोविड से बचना है तो मात्र एक उपाय है कि आप शीघ्र वैक्सीन लें।

अब राजनीति पर बात होनी चाहिए क्योंकि फरवरी व मार्च में 5 राज्यों के चुनाव होने वाले है जिसका बिगुल बज चुका है और 10 मार्च को परिणाम आ जायेगा। किसकी सरकार बनेगी ये तो समय ही बताएगा। चुनाव का परिणाम जो भी आये लेकिन चुनाव में मुद्दे लोगों से जुड़े हों जैसे बेरोजगारी, स्वास्थ, सड़कें तथा लोगों की आय किस प्रकार बढ़ाई जाए? साथ ही साथ महंगाई किस प्रकार रोकी जाए उसके लिए अपने तरीके जन मानस के सामने रखें। जनता जिससे सहमत होगी, उसे अपना मत देगी। लेकिन ऐसा वर्तमान स्थिति में नजर नहीं आ रहा है। जो नजर आ रहा है उसमें साफ दिखाई दे रहा है कि आपस में ही ऐसी खींचातानी है जैसे युद्ध हो रहा है और जनता मूकदर्शक हो गयी हो। इस समय देश के प्रधानमंत्री को ही राजनीतिक पार्टियाँ नीचा दिखाने में जुटी हुई हैं, जो बिल्कुल ठीक नहीं है। देश का प्रधानमंत्री सबका होता है, किसी पार्टी का नहीं। जिस प्रकार पंजाब में एक हाइवे पर प्रधानमंत्री को रोक दिया गया और अनहोनी होने के लिए छोड़ दिया गया वह सरासर गलत एवं शर्मनाक है। इसे राष्ट्र क्षमा नहीं करेगा । इसके लिए जो भी जिम्मेदार है उन पर सख्त से सख्त कार्यवाही होनी चाहिए।

इस अंक में वीर सपूत सुभाष चंद्र बोस जी के अनछुए पहलुओं को भी लिया गया है। साथ ही उत्तर प्रदेश चुनाव का शंखनाद और राजस्थान में कहां - कहां सैर करनी है, उसके विषय में भी दिया गया है। अंत में पुनः सभी को नव वर्ष की ढेर सारी शुभकामनाएं।

ब्रजेश कुमार

स्वामी विवेकानंद

(जन्मः 12 जनवरी 1863 - मृत्युः 4 जुलाई 1902)

स्वामी विवेकानंद वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। आपने अमेरिका स्थित शिकागो में 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था।

1. उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।

2. तुम्हें कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता। तुमको सब कुछ खुद अंदर से सीखना है। आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नही है।

3. खुद को कमज़ोर समझना सबसे बड़ा पाप है।

4. सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।

5. बाहरी स्वभाव केवल अंदरूनी स्वभाव का बड़ा रूप हैं।

6. ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं। वो हम ही हैं जो अपनी आंखों पर हांथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है।

7. विश्व एक विशाल व्यायामशाला है जहां हम खुद को मज़बूत बनाने के लिए आते हैं।

8. दिल और दिमाग के टकराव में दिल की सुनो।

9. शक्ति जीवन है, निर्बलता मृत्यु हैं। विस्तार जीवन है, संकुचन मृत्यु हैं। प्रेम जीवन है, द्वेष मृत्यु हैं।

10. किसी दिन, जब आपके सामने कोई समस्या ना आए-आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं।

11.यदि तुम अपनी अन्तिम सांस भी ले रहे हो तो भी न डरना। सिंह की शूरता और पुष्प की कोमलता के साथ काम करते रहो।

अनसुलझी गुत्थी शास्त्री जी

(2 अक्टूबर, 1904 - 11 जनवरी, 1966)

ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक

2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी से लगभग सात किलोमीटर दूर एक छोटे से कस्बे, मुगलसराय (पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर) के कूढ़कला गाँव (न्यू सेंट्रल कालोनी) में एक शिक्षक श्री शारदा प्रसाद जी के घर एक पुत्र रत्न पैदा हुआ था, जिसको प्यार से 'नन्हें' के नाम से बुलाया जाता था। जब नन्हें लगभग डेढ़ वर्ष के थे तभी उसके पिता का देहान्त हो गया था।

उस छोटे-से कस्बे में नन्हें की प्राथमिक शिक्षा रेलवे प्राइमरी स्कूल (जो अब रेलवे इण्टर कॉलेज है) उन दिनों रेलवे पावर हाउस के निकट था, वहाँ हुई। नन्हें की स्कूली शिक्षा कुछ खास नहीं रही लेकिन गरीबी की मार पड़ने के बावजूद उनका बचपन पर्याप्त रूप से खुशहाल बीता।

उन्हें वाराणसी में चाचा के साथ रहने के लिए भेज दिया गया था ताकि वे उच्च विद्यालय की शिक्षा प्राप्त कर सकें। यद्यपि घर पर सब उन्हें नन्हें के नाम से पुकारते थे लेकिन विद्यालय में नन्हें का नाम लालबहादुर कर दिया गया।

बड़े होने के साथ-ही लालबहादुर विदेशी दासता से आजादी के लिए देश के संघर्ष में अधिक रुचि रखने लगे। वे भारत में ब्रिटिश शासन का समर्थन कर रहे भारतीय राजाओं की महात्मा गांधी द्वारा की गई निंदा से अत्यन्त प्रभावित हुए। लालबहादुर जब केवल ग्यारह वर्ष के थे तब से ही उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कुछ करने का मन बना लिया था।

गांधी जी ने असहयोग आंदोलन में शामिल होने के लिए अपने देशवासियों से आह्वान किया था, इस समय वे केवल सोलह वर्ष के थे। उन्होंने महात्मा गांधी के इस आह्वान पर अपनी पढ़ाई छोड़ देने का निर्णय कर लिया था। उनके इस निर्णय ने उनकी माँ की उम्मीदें तोड़ दीं। उनके परिवार ने उनके इस निर्णय को गलत बताते हुए उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वे इसमें असफल रहे। उन्होंने अपना मन बना लिया था। उनके सभी करीबी लोगों को यह पता था कि एक बार मन बना लेने के बाद वे अपना निर्णय कभी नहीं बदलेंगें क्योंकि नाम से नन्हें तथा बाहर से विनम्र दिखने वाले लालबहादुर अन्दर से चट्टान की तरह दृढ़ हैं।

वे ब्रिटिश शासन की अवज्ञा में स्थापित किये गए कई राष्ट्रीय संस्थानों में से एक वाराणसी के काशी विद्या पीठ में शामिल हुए। यहाँ वे महान विद्वानों एवं देश के राष्ट्रवादियों के प्रभाव में आए। विद्या पीठ द्वारा उन्हें प्रदत्त स्नातक की डिग्री का नाम 'शास्त्री' था, इसलिए अब वे लालबहादुर शास्त्री के नाम से जाने जाते थे।

1927 में उनकी शादी हो गई। उनकी पत्नी ललिता देवी मिर्जापुर से थीं जो उनके अपने शहर के पास ही था। उनकी शादी सभी तरह से पारंपरिक थी। दहेज के नाम पर एक चरखा एवं हाथ से बुने हुए कुछ मीटर कपड़े थे। वे दहेज़ के रूप में इससे ज्यादा कुछ और नहीं चाहते थे।

आजादी के बाद जब कांग्रेस सत्ता में आई, उससे पहले ही राष्ट्रीय संग्राम के नेता विनीत एवं नम्र लाल बहादुर शास्त्री के महत्व को समझ चुके थे। 1946 में जब कांग्रेस सरकार का गठन हुआ तो इस 'छोटे से डायनमो' को देश के शासन में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए कहा गया। उन्हें अपने गृह राज्य उत्तर प्रदेश का संसदीय सचिव नियुक्त किया गया और जल्द ही वे गृह मंत्री के पद पर भी आसीन हुए। कड़ी मेहनत करने की उनकी क्षमता एवं उनकी दक्षता उत्तर प्रदेश में एक लोकोक्ति बन गई। वे 1951 में नई दिल्ली आ गए एवं केंद्रीय मंत्रिमंडल के कई विभागों का प्रभार संभाला - रेल मंत्री; परिवहन एवं संचार मंत्री; वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री; गृह मंत्री एवं नेहरू जी की बीमारी के दौरान बिना विभाग के मंत्री रहे। उनकी प्रतिष्ठा लगातार बढ़ रही थी। एक रेल दुर्घटना, जिसमें कई लोग मारे गए थे, के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते हुए उन्होंने रेल मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था। देश एवं संसद ने उनके इस अभूतपूर्व पहल को काफी सराहा।

अपने मंत्रालय के कामकाज के दौरान भी वे कांग्रेस पार्टी से संबंधित मामलों को देखते रहे एवं उसमें अपना भरपूर योगदान दिया। 1952, 1957 एवं 1962 के आम चुनावों में पार्टी की निर्णायक एवं जबर्दस्त सफलता में उनकी सांगठनिक प्रतिभा एवं चीजों को नजदीक से परखने की उनकी अद्भुत क्षमता का बड़ा योगदान था।

लालबहादुर शास्त्रीको 9 जून 1964 में देश का दूसरा प्रधानमंत्री बनाया गया था। 1965 में अचानक पाकिस्तान ने भारत पर सायं 7.30 बजे हवाई हमला कर दिया। परंपरानुसार राष्ट्रपति ने आपात बैठक बुला ली जिसमें तीनों रक्षा अंगों के चीफ व मंत्रिमंडल सदस्य शामिल थे। लालबहादुर शास्त्री कुछ देर से पहुंचे। विचार-विमर्श हुआ तीनों अंगों के प्रमुखों ने पूछा सर क्या हुक्म है?

शास्त्री जी ने तुरंत कहा आप देश की रक्षा कीजिए और मुझे बताइए कि हमें क्या करना है?

इतिहास गवाह है उसी दिन रात्रि के करीब 11.00 बजे करीब 350 हवाई जहाजों ने पूर्व निर्धारित लक्ष्यों की ओर उड़ान भरे। कराची से पेशावर तक जैसे रीढ़ की हड्डी को तोड़ा जाता है ऐसा करके सही सलामत लौट आए। बाकी जो घटा उसका इतिहास गवाह है। शास्त्री जी ने इस युद्ध में पं. नेहरू के मुकाबले राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और जय जवान-जय किसान का नारा दिया। इससे भारत की जनता का मनोबल बढ़ा और सब एकजुट हो गए। इसकी कल्पना पाकिस्तान ने कभी नहीं की थी।

किसी ने सच ही कहा है कि वीर पुत्र को हर मां जन्म देना चाहती है। लालबहादुर शास्त्री उन्हीं वीर पुत्रों में से एक हैं जिन्हें आज भी भारत की माटी याद करती है।

वर्ष 1966 में ताशकंद में भारत-पाकिस्तान समझौते पर दस्तखत करने के बाद शास्त्रीजी बहुत दबाव में थे। पाकिस्तान को हाजी पीर और ठिथवाल वापस कर देने के कारण उनकी भारत में काफी आलोचना हो रही थी।

उन्होंने देर रात अपने घर दिल्ली फोन मिलाया। कुलदीप नैयर बताते हैं, ''जैसे ही फोन उठा, उन्होंने कहा अम्मा को फ़ोन दो। उनकी बड़ी बेटी फोन पर आई और बोलीं अम्मा फ़ोन पर नहीं आएंगी। उन्होंने पूछा क्यों ? जवाब आया इसलिए क्योंकि आपने हाजी पीर और ठिथवाल पाकिस्तान को दे दिया। वो बहुत नाराज हैं। शास्त्री को इससे बहुत धक्का लगा।

कहते हैं इसके बाद वो कमरे का चक्कर लगाते रहे। फिर उन्होंने अपने सचिव वैंकटरमन को फ़ोन कर भारत से आ रही प्रतिक्रियाएं जाननी चाही। वैंकटरमन ने उन्हें बताया कि तब तक दो बयान आए थे, एक अटल बिहारी वाजपेई का था और दूसरा कृष्ण मेनन का और दोनों ने ही उनके इस कदम की आलोचना की थी।''

कुलदीप बताते हैं, ''उस समय भारत-पाकिस्तान समझौते की खुशी में ताशकंद होटल में पार्टी चल रही थी। मैं चूंकि शराब नहीं पीता था इसलिए अपने होटल के कमरे में आ गया और सोने की कोशिश करने लगा क्योंकि अगले दिन तड़के मुझे शास्त्री जी के साथ अफगानिस्तान के लिए रवाना होना था। मैंने सपने में देखा कि शास्त्रीजी का देहांत हो गया। फिर मेरे कमरे के दरवाज़े पर दस्तक हुई। जब बाहर आया तो एक वहां एक रूसी औरत खड़ी थी। बोलीं- यॉर प्राइम मिनिस्टर इज दाइंग।''

कुलदीप कहते हैं, ''मैंने जल्दी-जल्दी अपना कोट पहना और नीचे आ गया। जब मैं शास्त्री जी के डाचा में पहुंचा तो देखा बरामदे में रूसी प्रधानमंत्री कोसिगिन खड़े थे। उन्होंने मेरी तरफ़ देखकर इशारा किया कि शास्त्री जी नहीं रहे। जब मैं कमरे में पहुंचा तो देखा बहुत बड़ा कमरा था और उस कमरे में एक बहुत बड़ा पलंग था। उसके ऊपर एक बहुत छोटा सा आदमी नुक्ते की तरह सिमटा हुआ निर्जीव पड़ा था। रात ढ़ाई बजे के करीब जनरल अयूब आए। उन्होंने इजहारे-अफसोस किया और कहा, 'हियर लाइज अ पर्सन हू कुड हैव ब्रॉट इंडिया एंड पाकिस्तान टुगैदर'' (यहां एक ऐसा आदमी लेटा हुआ है जो भारत और पाकिस्तान को साथ ला सकता था)।

भारत का यह दुर्भाग्य ही रहा कि ताशकंद समझौते के बाद वह इस छोटे क़द के महान पुरुष के नेतृत्व से हमेशा-हमेशा के लिए वंचित हो गया। उन्हें 1966 में मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाज़ा गया।

तीस से अधिक वर्षों तक अपनी समर्पित सेवा के दौरान लाल बहादुर शास्त्री अपनी उदात्त निष्ठा एवं क्षमता के लिए लोगों के बीच प्रसिद्ध हो गए। विनम्र, दृढ, सहिष्णु एवं जबर्दस्त आंतरिक शक्ति वाले शास्त्री जी लोगों के बीच ऐसे व्यक्ति बनकर उभरे जिन्होंने लोगों की भावनाओं को समझा। वे दूरदर्शी थे जो देश को प्रगति के मार्ग पर लेकर आये। लाल बहादुर शास्त्री महात्मा गांधी के

राजनीतिक शिक्षाओं से अत्यंत प्रभावित थे। अपने गुरु महात्मा गाँधी के ही लहजे में एक बार उन्होंने कहा था - 'मेहनत प्रार्थना करने के समान है।' महात्मा गांधी के समान विचार रखने वाले लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ पहचान हैं।

एक प्रमाण

देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के मुगलसराय में जन्म लेने के बाद पर प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की थी का प्रमाण पत्र -

देश के दूसरे प्रधानमंत्री स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री में जन्म के तमाम प्रमाण मिलने के बावजूद राजनीतिक खेमेबाजी के कारण जो सम्मान मुगलसराय के लाल को मिलना चाहिए था वो अभी भी कोसों दूर है।

लाल बहादुर शास्त्री का भाग्य शुरू से अच्छा नही रहा ये बात इसलिए कही जा रही है क्योंकि उन्हें बचपन से लेकर मरने के बाद बाद जो सम्मान मिलना चाहिए था वह नही मिल सका।मात्र डेढ़ वर्ष की अल्पायु में उनके पिता का निधन हो गया। पिता का साया हटने के साथ उनकी पढ़ाई की जिम्मेदारी उनकी माता पर आ गयी। नन्हकू के नाम से इन्हें बचपन मे पुकारा जाता था इसी नाम से सबसे पहले उनका नामांकन जॉइंट रेलवे इंडियन बॉयज स्कूल जो अब (पूर्व मध्य रेलवे इंटर कॉलेज है) में हुआ था। कुछ दिन बाद उनके मामा बिंदेश्वरी लाल ने उनका नाम लाल बहादुर वर्मा करा दिया था।

पूर्व मध्य रेलवे इंटर कॉलेज में रखे उनके स्कॉलर रजिस्टर के अनुसार उनका नामांकन 8 जुलाई 1911 को कक्षा 1 मे हुआ। उस समय नन्हकू लाल ही था कुछ दिनों के बाद उक्त स्थान पर नाम काटकर लाल बहादुर वर्मा कर दिया गया। लाल बहादुर जब कक्षा 5 में थे तो शुल्क जमा न हो पाने के कारण विद्यालय से उनका नाम 22 अप्रैल 1915 को काट दिया गया था। इससे कुछ दिनों तक उनकी पढ़ाई बाधित रही। फिर बिन्देश्वरी लाल जी ने 11 मई 1915 को शुल्क जमा करके उनका पुनः नामांकन कराया था। इसके बाद इन्होंने कक्षा 6 तक की पढ़ाई यहाँ से की। तत्पश्चात उनकी माँ उन्हें साथ लेकर राम नगर आ गयीं। उनके पढ़ाई संबंधी प्रमाण पत्र को सच की दस्तक स्थानांतरण सर्टिफिकेट के माध्यम से आपके सामने प्रमाण रख रही है और इस आर्टिकल में भी आपके समकक्ष पेश कर रही है।

रेलवे से अवकाश प्राप्त श्री शिवेंद्र लाल चक्रवर्ती और जन्मस्थली के लिए 2005 से आज तक संघर्ष कर रहे कृष्णा गुप्ता के अनुसार के जन्मस्थली पर पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की पत्नी भी काफी बार आयी। श्राद्ध कार्यक्रम के दौरान इनका परिवार सेंट्रल कालोनी जन्मस्थान पर आते रहे। इन दोनों के अनुसार वर्तमान समय मे जन्मस्थान के बगल में एक मंदिर है।इन लोगों की माने तो जब लाल बहादुर शास्त्री जी रेल मंत्री हुए थे तब मंदिर के पुजारी ने उन्हें संदेशा भेजवाया था की इस प्रांगण में लाइट की आवश्यकता है। प्रतिउत्तर में पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने पुजारी जी कहा था कि आप के प्रांगण में लाइट तो लगवाया दू लेकिन आप बिजली का बिल नही दे पाएंगे।लेकिन पुजारी जी को तकलीफ न हो इसके लिए मंदिर के गेट पर एक बिजली का पोल देकर लाइट लगवा दिया जो आज भी मौजूद है।कुछ वर्ष पूर्व तक उनका नांम पोल पर अंकित था लेकिन रेलवे की लापरवाही से वो भी मिट गया है। चक्रवर्ती दा के अनुसार जब लाल बहादुर शास्त्री जी जब एक दिन

उपवास रखते थे तो जन्मस्थली के पास पड़ोसी लोग भी उपवास करते थे ।इतना लगाव था यहां के लोगों को अपने लाल के प्रति। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री के पौत्र ने भी जन्म स्थली के विकास के लिए केंद्र सरकार से की थी मांग ---

लाल बहादुर शास्त्री के बड़े पुत्र के लड़के विभाकर शास्त्री ने अपने दादा की जन्मस्थली के विकास के लिए केंद्र सरकार से मांग की थी। एक बार पुण्यतिथि पर वहां पहुंचकर उनके पौत्र विभाकर शास्त्री ने कहा था कि उनके दादा के साथ कभी भी किसी सरकार ने न्याय नहीं किया चाहे जन्म स्थली का मामला ही क्यों ना हो । मेरे दादा एक इमानदार देश के प्रधानमंत्री रहे लेकिन उनके जन्म स्थान पर आज भी कुछ नहीं है जो बिल्कुल गलत है ।जबकि सभी अपने देश के प्रधानमंत्री जो इस दुनिया में नहीं है उनके अनछुए पहलुओं को सब जाने सके इसके लिए संग्रहालय के रूप में स्मृति जरूर है । लेकिन लाल बहादुर शास्त्री जी के जन्मस्थान पर ये क्यों नही बना है?ये अन्याय क्यों है ?

पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जन्मस्थली के लिए कृष्णा गुप्ता का संघर्ष अदभुत

कृष्णा गुप्ता

मुगलसराय के लाल, लालबहादुर शास्त्री के जन्मस्थान के जीर्णोद्धार के लिए यदि किसी ने संघर्ष शुरू किया तो सबके जुबान पर कृष्णा गुप्ता का नाम आता है।

इस सम्बंध में कृषणा गुप्ता ने राष्ट्रीय मासिक पत्रिका ' सच की दस्तक' को बताया कि एक बार 2004 - 05 आमिताभ बच्चन जी के एक शो कौन बनेगा करोड़पति में एक प्रश्न पूछा गया था कि पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म कहाँ हुआ था ? जबाब के लिए हॉट सीट पर बैठे प्रतियोगी को 4 आप्सन मिले थे जिनमे 1.बनारस 2. आजमगढ़ 3 .मिर्जापुर 4 .मुगलसराय। सही जबाब प्रतियोगी को बताया गया था वो था मुगलसराय ।यह उत्तर मुझे बहुत प्रभावित कर गया।उसी दिन से मैंने मन मे ही ठान लिया कि हम लाल बहादुर शास्त्री जी के जन्मस्थान के विकास के लिए संघर्ष करेंगे।बाकायदा इसके लिए हमने टीम बनाई और आज तक हमारा संघर्ष जारी है और जब न्याय नही मिलता तब तक जारी रहेगा।

कृष्णगुप्ता ने बताया मेरी दिली चाहत थी कि मुगलसराय रेलवे स्टेशन का नाम लाल बहादुर शास्त्री जी के नाम पर हो । इसके लिए हम और हमारी टीम ने 16 जून 2014 में तत्कालीन रेल राज्य मंत्री मनोज सिंहा जी को 5 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा था ।लगभग बात मान ली भी गयी थी लेकिन मौजूदा सांसद व केंद्र में अभी भारी उद्योग मंत्री डॉ महेंद्र पांडेय ने हमारे मंसूबो पर पानी फेर दिया ।

एक बार फिर जो पहले की सरकारों ने पूर्व प्रधानमंत्री लाल बाहदुर शास्त्री जी के साथ अन्याय किया मोदी सरकार ने भी किया।

यदि मुगलसराय का नाम यदि लाल बहादुर शास्त्री जी के नाम पर हो जाता तो उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होती लेकिन ऐसा नही हो सका।जब हम लोगों ने इसका विरोध किया तो हमे हिरासत में ले लिया गया था।

कृष्णा गुप्ता ने बताया कि लाल बहादुर शास्त्री जन्मस्थान के जीर्णोद्धार के लिए मैं और मेरी टीम तत्कालीन प्रदेश के राज्यपाल महामहिम राम नाईक जी से 25 अगस्त 2015 को मुलाकात करके अपनी व्यथा बतलाया और एक पत्रक भी सौंपा।उनके तरफ से आश्वशन भी मिला ।लेकिन ढाक के तीन पात ही साबित हुआ ।

श्री गुप्ता ने 'सच की दस्तक' को जानकारी देते हुए यह बताया की जन्मस्थली पर सपा सरकार में कैविनेट मंत्री रहे आजम खां ने भी दौरा किया और जन्मस्थली के विकास के लिए आश्वशन

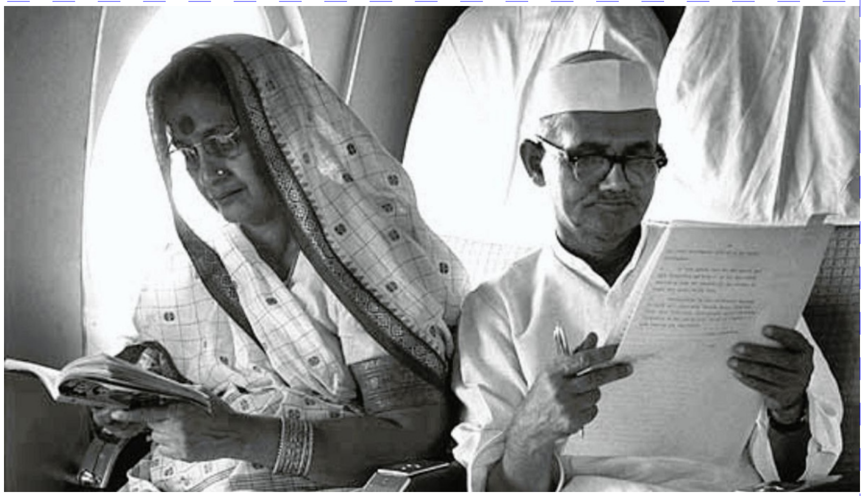

भी दिया था उस समय उन्होनें बकायदा केंद्र सरकार से इस स्थल को राज्यसरकार को सौंपने का आग्रह भी किया था। लेकिन तत्कालीन केन्द्र सरकार ने ऐसा नही किया। मेरा संघर्ष तब तक जारी रहेगा जब तक कि पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जन्मस्थली को न्याय नहीं मिल जाता।

केंद्र सरकार के फरमान से दुखी हुए हैं मुगलसरायवासी

जब से यह पता चला है कि केंद्र सरकार ने पूरे भारत में रेलवे द्वारा चलाए जा रहे विद्यालय को बन्द किया जा रहा है उस समय से मुगलसराय के बुद्धिजीवी वर्ग काफी दुखी हैं। उसका मुख्य कारण यह है कि पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी की जन्मस्थली पर न तो संग्रहालय है न कोई निशानी शेष बची है एकमात्र उस स्थान पर मूर्ति लगी हुई है उसकी हालत भी ठीक नही है उनके कान तक टूटे है।जिसकी देखरेख भी सरकार नहीं करती है बल्कि जन्मस्थली के लिए संघर्ष कर रहे लोग ही करते हैं ।

ऐसे में यदि रेलवे इंटर कॉलेज भी खत्म हो जाएगा तो उनकी स्मृति सदा सदा के लिए मुगलसराय से मिट जाएगी।तब बच्चे केवल यह जान पाएंगे कि पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जिन्होंने पाकिस्तान को छठी का दूध याद करवा दिया था और किसानों के लिए जय जवान जय किसान का नारा दिया था उनका जन्म मुगलसराय में हुआ कहां हुआ कहां पढ़ाई लिखाई हुई किसी को

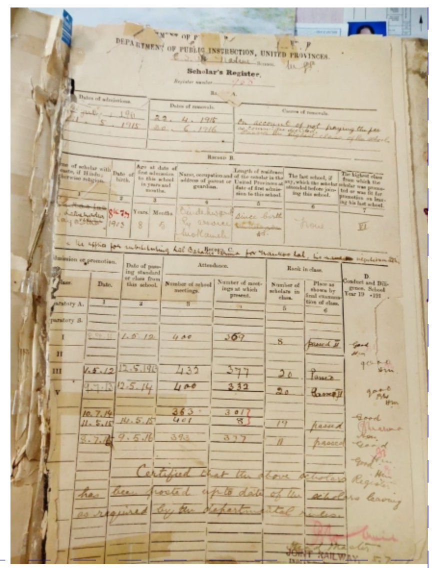

कभी सच का पता नहीं चल पाएगा।

सच की दस्तक की मांग

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका 'सच की दस्तक 'के संपादक के रूप में मैं स्वयं ही अपनी टीम के साथ मौजूदा केंद्र सरकार से विनम्र आग्रह करता हूं कि पूर्व मध्य रेलवे इंटर कॉलेज जो आज मौजूद है जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने अध्ययन किया था वो हम सब के लिए उनकी स्मृति स्वरूप धरोहर है उनके साथ छेड़छाड़ न किया जाए।

उन्हें बन्द न किया जाए बल्कि इस विद्यालय को सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन के माध्यम से ही केंद्रीय विद्यालय संगठन को सौंप दिया जाए या राज्य सरकार के माध्यम से ही इसे सुचारू रूप से चलने दिया जाए।

'सच की दस्तक 'मौजूदा केंद्र सरकार से एक और मांग करती है की जन्म स्थली पर एक उनके यादगार में संग्रहालय बनाया जाए डबल इंजन की सरकार होने के कारण राज्य सरकार और केंद्र सरकार के मध्य कोई विवाद भी नहीं आएगा जो अक्सर विवाद का कारण बना रहता है। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से विनम्र आग्रह है कि ताशकंद में हुए उनकी मौत की अनसुलझी गुत्थी भी सुलझाई जाए जिससे देश यह जान सके कि वास्तव में पूर्व प्रधानमंत्री की मौत कैसे हुई किन परिस्थितियों में हुई थी।यदि सरकार इन सब कार्यों को कर देती है तो हम सभी केंद्र सरकार के आभारी रहेंगे।

"श्री लाल बहादुर शास्त्री जी भारत के एकमात्र ऐसे प्रधानमंत्री थे जिनके पास न तो कोई अपना मकान था और न तो मरने के लिए अपने देश की जमीन।"

"मुझे गर्व है कि मैं भी रेलवे इण्टर कॉलेज, मुगलसराय का 1947 से 1957 तक छात्र था और 1978 से 1999 तक शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक के रूप में कार्यरत था।"

इन्दु भूषण कोचगवे

'संरक्षक, सच की दस्तक'

■■

23 जनवरी जयंती विशेष
कीर्ति अशेष कलम इनकी जय बोल
सुभाष चंद्र बोस

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव पर राष्ट्रीय धर्मिता के निर्वहन में चंदौली जनपद के दीनदयाल नगर निवासी वरिष्ठ रंगकर्मी साहित्यकार कृष्णकांत श्रीवास्तव ने अपनी कलम से विशेष स्वतंत्रता संग्रामी मुंशी प्रेमचंद, बनारस की बेटी लक्ष्मी बाई, मदन मोहन मालवीय, चंद्रशेखर आजाद आदि पर कीर्ति लेख लिखा। इस क्रम में आपके समक्ष नेताजी सुभाष चंद्र बोस पर केंद्रित है कीर्ति अशेष

- संपादक

कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी

'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा खून भी एक दो बूंद नहीं इतना कि एक महासागर बन जाए और उसमें मैं ब्रिटिश साम्राज्य को डुबो दूं।' नवंबर 1942 में जापान ने अंडमान द्वीप समूह को जीत लिया और अगले साल जापानी प्रधानमंत्री तोजो ने सुभाष को ये द्वीप सौंप दी। नेताजी की अस्थाई सरकार को तुरंत जापान, जर्मनी, इटली सहित 9 देशों ने मान्यता भी दे दी। इस सरकार का कामकाज रंगून से चल रहा था। यहीं से सुभाष ने कहा था ' स्वतंत्रता संग्राम के मेरे साथियों स्वतंत्रता बलिदान चाहती है ,आपने आजादी के लिए बहुत त्याग किया किंतु प्राणों की आहुति देना शेष है, ऐसे नौजवानों की आवश्यकता है जो अपना सर काट कर स्वाधीनता की देवी को भेंट चढ़ा सकें।'

ध्यातव्य है कि 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर के कैथी सिनेमा हॉल में शाम 4:00 बजे सुभाष ने ऐतिहासिक घोषणा करते हुए आरजी हुकूमत -आजाद -हिंद की स्थापना की घोषणा की, और स्वतंत्र भारत की अंतरिम सरकार का गठन किया। सुभाष ने आजाद हिंद फौज का पुनर्गठन किया और दिल्ली चलो, मुझे खून दो मैं आजादी दूंगा का नारा बुलंद किया। ध्यातव्य है कि नेताजी सुभाष चंद्र ने 30 दिसंबर 1943 को ही पहली बार पोर्ट ब्लेयर में यूनाइटेड फ्री इंडिया के

प्रधानमंत्री के रूप में झंडा फहराया था।

सुभाष का जन्म और परिवार

23 जनवरी 1897 की दोपहर जब कटक में सुभाष चंद्र बोस का जन्म हुआ तो उनकी मां प्रभावती को बहुत दिक्कत हुई। उनके पिता जानकी नाथ ने डायरी में लिखा 'भगवान का शुक्रिया आखिरकार उसने बच्चे को जन्म दे दिया '। उनके पिता के लिए यह कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं थी इसलिए उन्होंने डायरी में ज्यादा कुछ नहीं लिखा। सुभाष नवमी संतान थे और छठवें पुत्र थे। जानकीनाथ कटक के जाने-माने वकील थे और एक बड़े परिवार के मुखिया थे। वे बंगाल के गांव के रहने वाले थे।कोलकाता में वकालत की पढ़ाई करने के बाद कटक में आकर बस गए फिर आने वाले सालों में उन्होंने खुद को कटक के आला वकीलों में शुमार कर लिया। कटक के उड़िया बाजार की तंग गली में छोटे छोटे मकानों के बीच उनका एक बड़ा मकान था।सुभाष जब पैदा हुए तो दुनिया में कई महत्वपूर्ण घटनाएं घट रही थी। ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया अपनी डायमंड जुबली मना रही थी, पुणे में गंगाधर तिलक ने ब्रिटिश राज के खिलाफ पुख्ता तरीके से आवाज बुलंद करनी शुरू की थी और स्वामी विवेकानंद पूरे अमेरिका को सम्मोहित करने के बाद भारत लौट रहे थे।सुभाष ने अपनी ऑटोबायोग्राफी ' इंडियन पिलग्रिम्स 'में लिखा है एक बड़े परिवार का हिस्सा होना कई मामले में नुकसान दे होता है। आपको तवज्जो नहीं मिल पाती जिसकी आपको छोटी उम्र से ही जरूरत होती है। लेकिन लाभ भी है।आप अपने भीतर सामाजिकता विकसित होते हुए

पाते हैं।बचपन से मेरे स्वभाव में संकोच और अपने में सिमटे रहने की प्रवृत्ति थी। मोतीलाल नेहरू चाहते थे कि मैं हिंदू रीति-रिवाजों से बाहर निकलूं। मेरा घर सांस्कृतिक और धार्मिक था, अलबत्ता जवाहर के घर की स्थिति अलग थी। वहां पश्चात प्रभाव ज्यादा था। मैं बताना चाहता हूं कि मेरे घर के दरवाजे अतिथि देवो भवः की चिर कालीन भारतीय परंपरा की तर्ज पर दूर-दराज के रिश्तेदारों के लिए हमेशा खुले रहते थे। और लोगों के आने जाने से मेरे भीतर सामाजिकता विकसित होती गई।

विलक्षण प्रतिभा

कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज के शीर्ष शिक्षार्थी सुभाष ने आईसीएस की परीक्षा में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया पर अंग्रेजी हुकूमत की सेवा से इनकार कर दिया। यह युवक कोई और नहीं सुभाष चंद्र बोस थे। उनके पिता ने आखिरी समय तक उन्हें मनाया कि वे ऐसा फैसला न करें, लेकिन सुभाष के जेहन में यह था कि अंग्रेजों की नौकरी करने के बजाय देश को उनके चंगुल से मुक्त कराने की लड़ाई लड़ेंगे।जब भारत के किसी नेता के विदेशों में कोई संपर्क नहीं थे तब वे जर्मनी ,इटली, रूस और जापान सहित तमाम यूरोपीय मुल्कों के प्रमुख नेताओं और राष्ट्राध्यक्षों से मिलकर उन पर अपने चुंबकीय व्यक्तित्व का असर डाल चुके थे।असाधारण बुद्धिमान , जबरदस्त याददाश्त के धनीवक्ता सुभाष भारतीय स्वाधीनता संग्राम में कूदे उनकी उम्र महज 25 साल की थी। 30 साल की उम्र तक के भारत के ऐसे लोकप्रिय नेता बन चुके थे जिनकी लोकप्रियता महात्मा गांधी को भी पीछे छोड़ने वाली थी। युवा वर्ग उनका जबरदस्त दीवाना था और एक आवाज पर कुछ भी करने को तैयार था।

प्रकृति और अध्यात्म

सुभाष ने 'इंडियन पिलग्रिम्स' में लिखा है ' स्कूल में मैं भले स्वभाव वाला एक नेक बच्चा था। स्कूल के प्रधानाध्यापक बाबू बेनी माधव दास

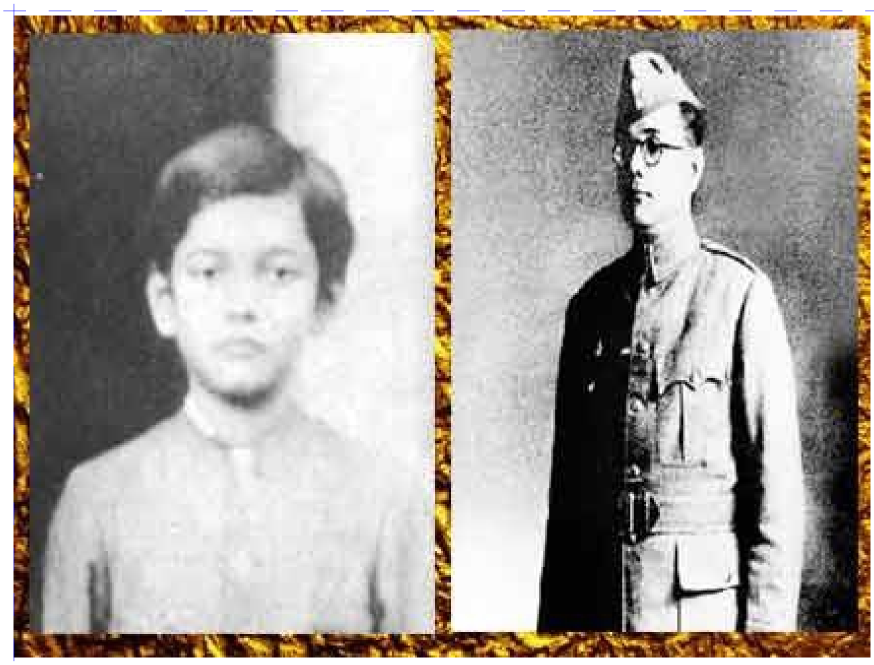

मुझसे बहुत प्रभावित थे। इतना ही नहीं नदी या किसी पर्वत के नीचे मैं ध्यान मग्न हो जाता और मौन अवलोकन का अभ्यास करने लगता। पुस्तकों का मेरे ऊपर बहुत प्रभाव था। पुस्तकों पर नजर दौड़ाते हुए मेरी नजर अचानक स्वामी विवेकानंद की किताब पर पड़ी। मैंने कुछ पन्ने बमुश्किल पलटे ही थे कि मुझे लगा कि आखिरकार जिस चीज की जरूरत मुझे है वह मुझे मिल गई। मैंने पुस्तकें उधार माँगी। मैं घर पहुंचा और जब तक उसे पूरा नहीं पढ़ लिया तब तक उठा ही नहीं। मेरे अंदर विवेकानंद जी का अस्तित्व रोमांचित हो उठा। स्वामी जी को पढ़ना एक सुखद अनुभव था और धीरे-धीरे स्वामी विवेकानंद जी मेरे जीवन के नए आदर्श बन गए। सबसे अच्छी बात यह थी कि विवेकानंद मानवता की सेवा के साथ मातृभूमि की सेवा की बात भी करते थे। वे कहते थे कि उपनिषदों का एक ही सार है - सामर्थ्यवान बनो, अपने आप पर श्रद्धा रखो, भरोसा करो खुद पर जैसा कि प्राचीन काल में नचिकेता ने किया था। मैंने विवेकानंद जी के बताए रास्ते पर चलने का निश्चय कर लिया। फिर उनके जरिए उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस से भी मेरी मुलाकात हुई। उनकी शिक्षाओं का मूल आधार था कामवासना और सांसारिक वैभव का त्याग। यह दोहरा त्याग ही किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक सेहत का पैमाना है। परमहंस जी द्वारा कही जा रही बातों का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि वह जो कहते थे उसे खुद अनुभव कर चुके थे।

सुभाष के क्रांतिकारी कदम

इस स्तंभ को शुरू करने के पहले मैं क्रांतिकारी यतींद्र नाथ दास के निम्नलिखित पंक्तियां उद्धृत करना चाहता हूं -

आंसू बिखराते बीतेगी
जलती जीवन घड़ियां
बिना चढ़ाए शीश
नहीं टूटेगी मां की कड़ियां
दुनिया में जीने का
सबसे सुंदर मधुर तकाजा
ये शहीद उठने दे अपना
फूलों भरा जनाजा....

अपनी मातृभूमि से दूरदराज रहकर देश विदेश में मातृभूमि की आजादी के लिए संघर्ष करता व्यक्ति एक सुभाष है जिसकी पराकाष्ठा अवर्णनीय है।

मई 1921 में सुभाष ने भारतीय नागरिक सेवा से त्यागपत्र देकर स्वयं को पूर्ण रूप से देश सेवा के कार्य में समर्पित कर दिया। उन्होंने प्रिंस ऑफ वेल्स के बहिष्कार में भाग लिया जिससे उन्हें 6 माह का कारावास दंड मिला। असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिए जाने के कारण उनका गांधीजी से मतभेद हो गया। 1923 में सुभाष कोलकाता के मेयर चुने गए किंतु 1924 में उन्हें पुनः गिरफ्तार करके मांडले जेल भेज दिया गया। सुभाष ने देशबंधु चितरंजन दास को स्वराज दल की स्थापना में महत्वपूर्ण सहयोग दिया और दल द्वारा प्रकाशित' फॉरवर्ड पत्र ' के संपादक बन गए। 1928 में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू के सहयोग से ' स्वतंत्र लीग 'की स्थापना की। दिसंबर 1929 को लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास किए जाने पर वे पुनः कांग्रेस में शामिल हो गए। सुभाष देश के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करने वाले प्रथम व्यक्तियों में से थे।भगत सिंह को फांसी दिए जाने पर उन्होंने संपूर्ण देश का दौरा कर देश के नव युवकों में एक नवीन चेतना का संचार किया।सुभाष शुरू से तिलक की उग्रवादिता के समर्थक थे। वे 1938 में हरीपुरा कांग्रेस अधिवेशन

के अध्यक्ष चुने गए । वे चाहते थे कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को स्वतंत्रता प्राप्ति की एक निश्चित तिथि कर देनी चाहिए । अगले वर्ष 1939 में सुभाष पुनः कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए खड़े हुए । उनके विरुद्ध गांधी जी के आशीर्वाद से सीतारमैया को खड़ा किया गया ।गांधीजी के विरोध के बावजूद सुभाष चंद्र बोस पुनः त्रिपुरा कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए ।किंतु गांधी जी के विरोध से तंग आकर उन्होंने कांग्रेस को छोड़ दिया और ' फारवर्ड ब्लाक 'की स्थापना की । शीघ्र ही विशाल संख्या में युवक इस दल में सम्मिलित हो गए । सुभाष जी गांधीजी के अहिंसात्मक साधनों से सहमत नहीं थे । द्वितीय विश्व युद्ध से उत्पन्न परिस्थितियों का लाभ उठाकर सुभाष देश को तत्काल स्वतंत्र कराना चाहते थे ।देश में क्रांतिकारी गतिविधियों का विकास हो रहा था । 13 मार्च 1940 को पंजाब के सुनाम नामक स्थान के सरदार उधम सिंह ने लंदन में सर माइकल ओ डायर की गोली मारकर हत्या कर दी । उन्हीं दिनों सुभाष कोलकाता में अंग्रेजों की सार्वजनिक स्थानों से मूर्तियां हटाने के लिए आंदोलन करने वाले थे किंतु 2 जुलाई 1941 को भारतीय सुरक्षा कानून के अंतर्गत उन्हें गिरफ्तार करके कोलकाता की प्रेसिडेंसी जेल में बंद कर दिया गया।

4 जुलाई 1943 को रासबिहारी बोस ने सिंगापुर में सुभाष को आजाद हिंद फौज का नेतृत्व सौंप दिया । सुभाष में नए सिरे से आजाद हिंद फौज का पुनर्गठन किया और उसमें नई ऊर्जा फूटी । सुभाष ने स्वयं को आजाद हिंद फौज का का सर्वोच्च सेनापति बनाया।

21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर के कैथी सिनेमा हॉल में संध्या 4:00 बजे सुभाष ने ऐतिहासिक घोषणा करते हुए आरजी हुकूमत -ए-आजाद हिंद की स्थापना की घोषणा की । जिसमें 21 सदस्यीय मंत्रिमंडल था । सुभाष आजाद हिंद सरकार के राष्ट्राध्यक्ष , प्रधानमंत्री ,युद्ध मंत्री , विदेश मंत्री एवं सर्वोच्च सेनापति बने । सुभाष द्वारा गठित समिति ने " भारत की राष्ट्रीय भाषा हिंदी , अभिवादन जय हिंद , राष्ट्रीय झंडा

तिरंगा , राष्ट्रीय गान टैगोर की कविता , राष्ट्रीय चिन्ह सिंह और उदघोष दिल्ली चलो निश्चित किया । सुभाष ने पुनर्गठित आजाद हिंद फौज के दो मुख्यालय बनाए सिंगापुर और रंगून । इस पुनर्गठित फौज का सिंगापुर में

निरीक्षण करते समय सुभाष ने दिल्ली चलो , तुम मुझे खून दो मैं आजादी दूंगा का नारा बुलंद किया।

सुभाष ने आजाद हिंद फौज में गांधी , आजाद , और नेहरू ब्रिगेड बनाई । इन तीनों के चुने सैनिकों को लेकर मलाया में पहली छापामार रेजिमेंट बनाई गई जिसका नाम सुभाष ब्रिगेड रखा गया । शाहनवाज खान इस छापामार ब्रिगेड का सेनापति बनाया गया । सुभाष ने एक महिला रेजिमेंट भी बनाई जिसका नाम रानी झांसी था । लक्ष्मी सहगल इसकी कमांडर नियुक्त की गई । नवंबर 1943 को जापान ने अंडमान और निकोबार द्वीप सुभाष को सौंप दिया। सुभाष ने इन द्वीपों का नाम शहीद और स्वराज रखा । 30 दिसंबर 1943 को पोर्ट ब्लेयर में सुभाष से पहली बार तिरंगा झंडा फहराया। सुभाष की अंतरिम सरकार को जर्मनी , जापान , फिलीपींस, कोरिया , इटली ,आयरलैंड ,

वर्मा ,चीन थाईलैंड , मंचूरिया ने तुरंत मान्यता दे दी जिसे भारत में अंग्रेजी हुकूमत की जड़े हिलने लगी।

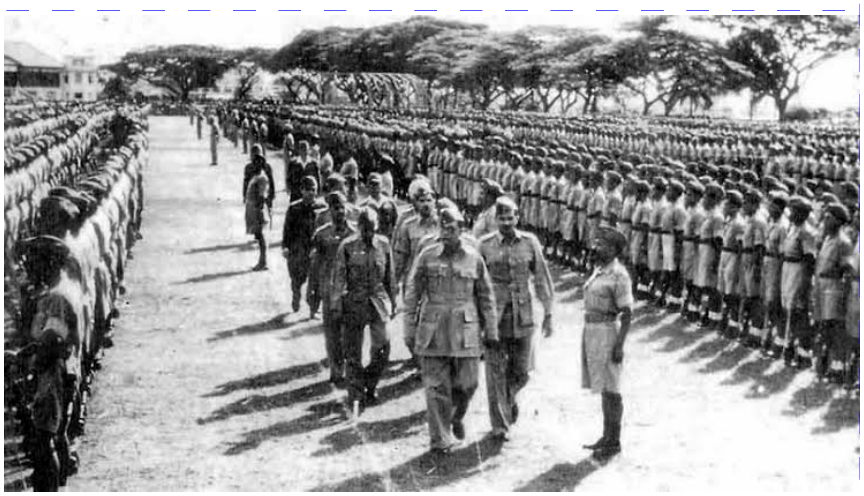

जनवरी 1944 में आजाद हिंद सरकार की राजधानी सिंगापुर से रंगून स्थानांतरित कर दी गई ।आजाद हिंद फौज ने अंग्रेजो के खिलाफ पहली विजय 4 फरवरी 1944 को अराकान के मोर्चे पर हासिल की । मार्च 1944 को इस सेना ने पहली बार भारत की सीमा में मणिपुर में प्रवेश किया और वहां तिरंगा फहराया ।

4 जून 1944 को सुभाष ने सिंगापुर से महात्मा गांधी के नाम एक रेडियो संदेश प्रसारित किया जिसमें उन्होंने गांधीजी को पहली बार "देश का पिता " कह कर संबोधित किया और उनसे

विजय का आशीर्वाद और शुभकामनाएं मांगी । इसके बाद 6 जुलाई 1944 को रंगून रेडियो से सुभाष ने महात्मा गांधी से भावनात्मक अपील की और उन्हें 'राष्ट्रपिता' कह कर संबोधित किया । 22 दिसंबर 1944 को सुभाष ने शहीदी दिवस मनाया । नेताजी का लक्ष्य दिल्ली पहुंचकर लाल किले पर तिरंगा फहराना था किंतु अकस्मात युद्ध की स्थितियां परिवर्तित होने लगी ।1944 के उत्तरार्ध में विश्व युद्ध में जापान का पक्ष दुर्बल होने लगा । आजाद हिंद फौज के अधिकांश सैनिक और अधिकारी बंदी बना लिए गए । अंग्रेजी सेना विजय हासिल करती हुई रंगून की ओर बढ़ रही थी ।अतः सुभाष को रंगून छोड़ने पर विवश होना पड़ा और उनका अज्ञात सफर शुरू हो गया.....

जनवरी 1941 सुभाष कोलकाता से पठान मोहम्मद जियाउद्दीन के वेश में पुलिस को चकमा देते हुए भाग निकले और अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहुंचे। 29 मई 1942 सुभाष ने जर्मनी के सर्वोच्च नेता एडोल्फ हिटलर से मुलाकात की । हिटलर के साथी रिबेन ट्रॉप के साथ मिलकर ब्रिटिश विरोधी कार्य आरंभ

किया । सुभाष ने उत्तरी अफ्रीका में कैद भारतीय सैनिकों को बर्लिन लाकर इंडियन लीग (मुक्ति सेना) की स्थापना की ।इन सैनिकों ने ही बर्लिन में सुभाष जी को ' नेताजी ' की उपाधि से महिमामंडित किया । जर्मनी ने आरंभ में सुभाष कि वहां उपस्थिति को गुप्त रखा पर धीरे-धीरे बात प्रकट हो गई।इसी बीच जापान ने सिंगापुर पर कब्जा कर लिया और हजारों भारतीय सैनिकों को बंदी बना लिया अब सुभाष के लिए दक्षिण पूर्व एशिया महत्वपूर्ण हो गया था जापान टोक्यो में निर्वासित जीवन जी रहे भारतीय क्रांतिकारी रासबिहारी बोस जिन्होंने कैप्टन मोहन सिंह के साथ मिलकर 1942 में आजाद हिंद फौज का गठन किया , ने 23 जून 1942 को बैंकॉक में एक सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें सुभाष को पूर्व एशिया बुलाने का फैसला किया गया था । दिसंबर 1942 में जब जापान सरकार ने मोहन सिंह को कैद कर आजाद हिंद फौज को भंग कर दिया तो अप्रैल 1943 में रासबिहारी बोस में पुनः बैंकॉक सम्मेलन का आयोजन किया और आजाद हिंद फौज को पुनः संगठित करने का काम सुभाष बोस को देने का निर्णय लिया । इसी बीच जापान में जर्मनी के पक्ष में विश्व युद्ध में शामिल हो गया सुभाष ने जापान की ओर प्रस्थान किया ताकि जापानी सहायता से ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष प्रारंभ किया जा सके । जून 1943 में सुभाष टोक्यो आये ।जापान के प्रधानमंत्री तोजो ने सुभाष का स्वागत किया । सुभाष ने टोक्यो रेडियो पर बोलते हुए ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ सशस्त्र संग्राम और ब्रिटिश भारत के पूर्वी सरहद पर आक्रमण करने की घोषणा की । 2 जुलाई 1943 को सुभाष पनडुब्बी से जापान नियंत्रित सिंगापुर पहुंचे।

प्यार- विवाह - बेटी

सुभाष जी का पहला प्यार उनका अपना देश था । अपने पहले बर्लिन प्रवास के दौरान में स्वास्थ्य लाभ लेते हुए सुभाष जी को अपनी पुस्तक ' द इंडियन स्ट्रगल ' लिखने की इच्छा हुई । उन्हें स्टेनोग्राफर की तलाश थी । इसके लिए सुभाष ने ऑस्ट्रिया के वियना में जन्मी स्टेनोग्राफर एमिली शेंकल को नियुक्त किया । दोनों में सानिध्य बढ़ता रहा और प्रेम हो गया । मिहिर बोस ने अपनी किताब ' द लास्ट हीरो ' में लिखा है सुभाष ने 1934 से 1942 के बीच एमिली को 180 पत्र लिखे । यह पत्र बोस परिवार को 1980 में घर की सफाई के दौरान सुभाष के पुराने सिगार बॉक्स से मिले है । दोनों का विवाह कब हुआ यह असमंजस भरा सवाल है । एमिली ने सुभाष के परिवार वालों को बताया था कि उनकी शादी 1937 में हुई । ऐसा कहा जाता है कि 18 नवंबर 1937 को सुभाष विमान से यूरोप के लिए रवाना हुए । उन्होंने क्रिसमस ऑस्ट्रिया के खूबसूरत कस्बे तेगस्टिन में मनाया । इस खूबसूरत कस्बे में ही 26 दिसंबर 1937 को एमिली शेंकल से शादी रचाई । सुभाष के भतीजे शिशिर और पोते सुगाता ने अपनी किताबों में स्पष्ट रूप से लिखा है कि नेताजी ने

एमिली से 26 दिसंबर 1937 को गुप्त शादी की । सुभाष के जीवनीकारों का मानना है कि यह शादी 1941 में हुई । 11 नवंबर 1971 को एमिली ने इतिहासकार बी .आर . नंदा से कहा था 'हमारी शादी 1937 में हुई थी ।'

सच जो भी हो इनसे एक बेटी हुई जिसका नाम अनिता बोस था ।

ताइवान हवाई हादसा

सुभाष का अज्ञात सफर बहुत रहस्य पूर्ण और कौतूहल से भरा हुआ है। अटल जी की निम्नलिखित पंक्तियां.....

किसी सिपाही का नैराश्य निनाद नहीं

जूझते योद्धा का जय संकल्प है ,

वह निराशा का स्वर नहीं

आत्मविश्वास का जयघोष है सुभाष जी पर प्रासंगिक है ।18 अगस्त 1945 को टोक्यो जाते हुए ताइवान के तोईहोक हवाई अड्डे के पास नेताजी का हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो । 23 अगस्त को टोक्यो रेडियो ने तोईहोक मिलिट्री अस्पताल में नेताजी के निधन की घोषणा की। हालांकि यह अभी तक रहस्य ही है नेता जी तब मारे गए थे या नहीं । भारत सहित कई देशों की प्रमुख खुफिया एजेंसियों ,समितियों ने अपने अपने तरीके से सच्चाई को खंगालने की कोशिश की । कुछ स्वतंत्र जांच भी हुई । कई देशों में हजारों पन्नों की गोपनीय फाइलें बनी । तमाम किताबें लिखी गई । पर रहस्य ऐसा है जो सुलझा भी लगता है और अनसुलझा भी ।हादसे के समय , दिन , हकीकत और दस्तावेजों को लेकर तमाम तर्क वितर्क दावे और अविश्वास अभी तक जारी है।

कौन थे गुमनामी बाबा ?

कौन थे शालमारी आश्रम के स्वामी श्रद्धानंद ?

कौन थे मध्यप्रदेश के चर्चित ज्योतिदेव ?

स्वतंत्रता के 75वे अमृत महोत्सव पर सुभाष के शाश्वत शौर्य की सुगंध देश के राष्ट्र प्रेमियों को एक पैगाम देता है -

तेरा शबाब अमानत है सारी दुनिया की

तू खार जार जहां में

गुलाब पैदा कर

तू इंकिलाब की आमद का इंतजार न कर

जो हो सके तो

अभी इंकलाब पैदा कर......

■■

यूपी चुनाव का शंखनाद

आकांक्षा सक्सेना
न्यूज ऐडीटर सच की दस्तक

आदरणीय शुभचिंतकों यूपी चुनाव का शंखनाद हो चुका है और आचार संहिता लग चुकी है । आचार संहिता का मतलब है कि देश में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए चुनाव आयोग कुछ नियम बनाता है। चुनाव आयोग के इन्हीं नियमों को आचार संहिता कहते हैं। लोकसभा/विधानसभा चुनाव के दौरान इन नियमों का पालन करना सरकार, नेता और राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी होती है और जनता की भी जिम्मेदारी होती है ।आचार संहिता चुनाव की तारीख की घोषणा के साथ ही लागू हो जाती है। देश में लोकसभा चुनाव हर पांच साल पर होते हैं। अलग-अलग राज्यों की विधानसभा के चुनाव अलग-अलग समय पर होते रहते हैं। चुनाव आयोग के चुनाव कार्यक्रमों का एलान करते ही आचार संहिता लागू हो जाती है।आचार संहिता चुनाव प्रक्रिया के संपन्न होने तक लागू रहती है। आचार संहिता यहां तक कहती है कि जाति-धर्म-वर्ग-धन आदि किसी

चीज का लालच न देते हुये वोट मांगे जायें पर चुनावों का सच किसी से छिपा नहीं है । वैसे तो, राजनीतिक परिदृश्य से उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव की रणनीति तय हो चुकी है।गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश में 7 चरणों में चुनाव होंगे। जबकि नतीजे 10 मार्च को आएंगे। उत्तर प्रदेश की राजनीति काफी दिलचस्प मानी जाती है और यही कारण है कि सभी लोगों की निगाह उत्तर प्रदेश पर टिकी हुई है। उत्तर प्रदेश में फिलहाल भाजपा सत्ता में है। ऐसे में एक बार फिर से उसके लिए सत्ता में वापसी करना ऐतिहासिक होगा। जिसके लिये योगी जी द्वारा बच्चों को टेबलेट भी दिये जा रहे हैं और सुरक्षा व्यवस्था भी पहले से ज्यादा सख्त़ है। वहीं इस चुनावी बरसात में जातिवाद, हिंदू मुस्लिमवाद,मंदिर-मस्जिद,आंदोलन सबकुछ साफ तैरता बखूबी दिखाई दे रहा है और पार्टियां हर जात - वर्ग को साधने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहीं हैं। जिसपर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद सुरेश कश्यप ने कहा की अगर हाटी समुदाय की लड़ाई किसी पार्टी ने लड़ी है तो वह भाजपा है , कांग्रेस ने केवल इस मुद्दे पर राजनीति की है। भाजपा ने निरंतर हाटी समुदाय को जनजातीय दर्जा दिलाने का प्रयास किया है। वहीं बसपा और कांग्रेस भी ताल ठोकती नजर आ रही है कि लड़की हूं लड़ सकती हूँ। पर आंकड़े गवाही देते हैं कि टक्कर सपा और बीजेपी में है। वहीं योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि मेरे टक्कर किसी से नहीं। जनता समझदार है और फर्क साफ है। उधर सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को टक्कर देने के लिए अपने अभियान को तेज करते हुए, समाजवादी पार्टी (सपा) विभिन्न समुदायों को लुभाने के लिए कई आउटरीच कार्यक्रमों में लगी हुई है। हालाँकि अब तक जो स्पष्ट हुआ है वह यह है कि सपा राज्य में मुस्लिम मतदाताओं तक पहुँचने के लिए किसी तरह के कदम नहीं उठा रही है। अखिलेश के इस कदम के पीछे की वजह राजनीति का चर्चित 'टीना फैक्टर' (कोई विकल्प नहीं) है। राजनीति में टीना फैक्टर विकल्पविहीनता की स्थिति को कहते हैं।सपा ने यूपी चुनावों के लिए पांच छोटे दलों के साथ गठबंधन किया है, लेकिन इससे इतर सपा ने किसी भी पार्टी के साथ हाथ नहीं मिलाया है, जिसका राज्य में मुसलमानों के बीच बेस माना जाता है। कुछ समय पहले ही अखिलेश ने असदुद्दीन ओवैसी की एआईएमआईएम से हाथ मिलाने से इनकार कर दिया था। जबकि लैला के सपने में छैला तक की बातें की गयीं । इसके पीछे मुख्य कारण, सपा नेताओं का कहना है कि पार्टी भाजपा के पक्ष में बहुसंख्यक हिंदू वोटों का ध्रुवीकरण नहीं करना चाहती थी। मुस्लिम समुदाय उत्तर प्रदेश की आबादी का लगभग 20 प्रतिशत है, लेकिन मौजूदा सांप्रदायिक स्थिति को देखते हुए, कोई भी विपक्षी दल राज्य में बहुसंख्यक समुदाय की प्रतिक्रिया के डर से उनके बारे में खुलकर बात नहीं कर रहा है।एक रिपोर्ट के अनुसार सपा को डर है कि अगर वह मुस्लिम मुद्दों के बारे में बहुत मुखर हो गई, तो इससे यूपी में हिंदू समुदाय के बीच ध्रुवीकरण हो जाएगा। सपा नेता ने कहा कि पार्टी ने पिछले साल पूरे यूपी में अपने रैंक और फाइल के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए, जिसमें स्थानीय नेताओं को यह समझा गया कि अगर पार्टी राज्य में अपनी सरकार बनाना चाहती है तो मुस्लिम मुद्दों पर सार्वजनिक बहस को रोकने की जरूरत है। नेता के अनुसार सभी का मानना हैं कि सपा भाजपा से बेहतर मुसलमानों के लिए होगी और इसीलिए पार्टी के भीतर का मुस्लिम नेतृत्व भी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व द्वारा बनाई गई रणनीति से सहमत है। जबकि सपा योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार को ब्राह्मणों, पिछड़े समुदायों और दलितों से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर निशाना बना रही है, उसने राज्य

के धर्मांतरण विरोधी कानून और मंदिर के लिए नए सिरे से मांग जैसे मुद्दों पर चुप रहना चुन लिया है। इस महीने की शुरुआत में अखिलेश जी ने लखनऊ के गोसाईगंज इलाके में अपनी पार्टी के एक ब्राह्मण नेता द्वारा बनवाए गए भगवान परशुराम जी के मंदिर में पूजा-अर्चना करके ब्राह्मण वोट साधने की पूरी कोशिश की। इसी तरह, उन्होंने रायबरेली जिले की अपनी यात्रा के दौरान दिसंबर में एक हनुमान जी मंदिर का भी दौरा किया। यह पूछे जाने पर कि क्या इससे पार्टी को मुस्लिम समुदाय से समर्थन खोना पड़ेगा, सपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता अब्दुल हफीज गांधी ने कहा, 'समाजवादी पार्टी समावेशी राजनीति में विश्वास करती है। अब यह चुनावी मौसम है और हर नेता जनता को सब्जबाग दिखायेगा, नौकरी का आश्वासन दिया जायेगा पर चुनाव जीतने के बाद ढ़ाक के वही तीन पात। क्या कभी किसी पार्टी ने यह सोचा! कि कचहरी में रोती बिलखती बेरोजगार पति द्वारा परित्याग की हुई महिलाएं आखिर! कैसे अपना भरण पोषण करें? कोर्ट द्वारा विपक्ष पार्टी से महीने दो हजार मिल भी जायें तो आज की मंहगाई में वह इतनी छोटी राशि से कैसे अपनी पहाड़ जैसी जिंदगी का बोझ ढ़ोयें। क्या किसी सरकार ने इन लड़कियों की सरकारी नौकरी में प्राईवेट नौकरी में कहीं कोई सुविधा या आरक्षण का प्रावधान किया है? तो जवाब होगा नहीं? तो कैसे कहते हैं कि हम बेटियों का हित चाहते हैं?लड़की पर रोजगार नहीं, धन नहीं तो निज हक के लिए कैसे लड़ सकती है? जो बेटियां कोर्ट में गुड़ियों की

उम्र में जाती हैं और बुढ़ियों की उम्र तक तारीख के झमेलों में घसीटी जाती हों, ऐसे में बेटी दिवस के क्या मायने होगें? वो कहां जायें? पुरूष परित्याग कर दे तो वह बेटी के जीवन के लिए सरकार क्यों गम्भीर नहीं? आखिर! मुकदमों की समय सीमा क्यों निर्धारित नहीं? बुरा मत मानना जो मैं सच लिख दूं कि मान. जितनी चिंता आप सबको चुनावों की रहती है सच कहूं तो उतनी चिंता जनता के अथाह दर्द की होती तो आपको वोट मांगने की जरूरत ही न पड़ती। आज आप सर्वे करवा लीजिए कि देश की किसी भी गली नुक्कड़ चौराहे से निकलो तो कई घर ऐसे मिल जायेगें जहां दहेज के लालच में पति द्वारा छोड़ी गई महिलाएं अंधेरे में सिर धुन रही हैं। वह जनरल विरादरी में हैं तो सरकारी योजनाओं का ज्यादा लाभ तक उन्हें नहीं मिल पाता। बेचारी किसी तरह अकेला जीवन काटने पर विवश हैं।दूसरी तरफ़ खेती के मुकदमें यह भी पीढ़ी दर पीढ़ी चलते हैं। जब न्याय पाने वाला ही न बचा तो यह न्याय कहां हुआ? आखिर! हमारी न्याय व्यवस्था का आधुनिकीकरण कब होगा? कोई तो समय सीमा होनी चाहिए। वहीं दूसरा वर्ग है सीवर में घुस कर सफाई कर्मचारियों का वर्ग जिसे सीवर यानि मौत से साक्षात्कार करना पड़ता है और गरीबी के चलते वह बेबस हैं। आखिर!क्यों यह काम मशीनों द्वारा नहीं किया जा सकता? आखिर! जमीनी मुद्दे कब प्रकाश में आयेगें? जब हजारों करोड़ों के प्रोजेक्ट लगायें जा सकते हैं तो क्या हर देशवासी को रोजगार नहीं दिया जा सकता? सिक्किम में एक घर एक व्यक्ति रोजगार योजना शुरू हुई पर सिर्फ़ गरीबों के लिए। अरे! भई मध्यम वर्ग किसे रोयेगा? जब आप वोट सबका चाहते हो तो रोजगार सबको क्यों नहीं देते? कोई योजना हो तुरंत फिल्टर लगा दिया जाता है। ये कहां तक सही है माननीय। कितनी बड़ी विडम्बना है कि जातिविशेष को पूरी जाति को ही गरीब मानकर पूरी सुविधाओं का लाभ मिलता है चाहे परिवार में सब सरकारी जॉब में क्यों न हो। जातिगत आरक्षण से मध्यम वर्ग उस हद तक पिछड़ गया है कि एक समय ऐसा आयेगा जब इसे आरक्षण की सबसे ज्यादा जरूरत होगी। ईश्वर ही जाने नीतिआयोग सब

देखकर क्यों मौन है और तारीख पर तारीख लेकर पीड़ित जन अपनी किस्मत मान कर मौन है। और बेशर्मी से नेता लोग वोट लेकर चोट करते रहते हैं और लोग फिर भी वोट देते रहते हैं कि इस आशा से कि मेरा कुछ भला होगा। जब मैं ध्यान से देखतीं हूं कि मेरा देश हो या सम्पूर्ण विश्व रूपी एक शरीर जिसके रगों में राजनीति दौड़ रही है । आज स्कूल, कॉलेज, कोर्ट, धार्मिक संगठन, अस्पताल कमेटियां, हर जगह अध्यक्ष, महामंत्री और चुनाव यानि हर खेमे में राजनीति। आज बच्चा बचपन में ही नेताओं के नाम जान जाता है पर वैज्ञानिकों और उनके अविष्कारों के नहीं । वह पढ़ाई से जी चुराता है और भाषण देकर सरलता से नेता बनना चाहता है। क्योंकि यह उसे आसान लगता है। पूरे विश्व की यही हालत है कि राजनीति खून बनकर दिलों तक दौड़कर दिलों को तोड़ रही है घर परिवार बिखर रहे हैं और धन ही भगवान बन चुका है। कितना दुःखद है मानवता नैतिकता में भारी गिरावट देखी जा रही है और पता नहीं यह कहां तक गिरकर मनुष्यता का पकन करेगी और मनुष्य कब सत्ता को मोहपाश से छूट कर मानवता के साथ कदमताल कर सकेगा? दोस्तों! इसी देश में गद्दारों का एक मुट्ठी भर समूह पीएम जी को दिनभर कोसता रहता है वहीं दूसरा क्रांतिकारियों का वर्ग हाथ जोड़कर सवाल करता रहत है सत्य की भीख मांगता रहता है कि आजादी के इतने वर्ष बीत गये आखिर! सुभाषचंद्र बोस जी और लाल बहादुर शास्त्री जी की मौत का सच कब सामने आयेगा? पर दोनों राष्ट्रनायकों पर सब मौन..? कुछ कहते हैं कि गुमनामी बाबा ही नेताजी थे और रोज यह बुलेटिन हो रहा था तो उस समय के पक्ष- विपक्ष के नेताओं ने गुमनामी बाबा से मिलकर सच जानने कोशिश क्यों नहीं की? यदि सच फाईलों में कैद है तो सारी फाईलें ओपिन क्यों नहीं करती सरकारें? कुछ लोगों की माने तो यदि नेताजी के मामले में कांग्रेस जिम्मेदार है तो सत्तारूढ़ बीजेपी सारी फाईलें ओपिन क्यों नहीं कर रही? अगर कांग्रेस दोषी नहीं तो आखिर! सच पर पर्दा क्यों? किसी पार्टी पर आरोप कब तक लादकर सच से किनारा होता रहेगा? अब देश के महान प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की करें तो उनका पार्थिव शरीर अत्यधिक फूला हुआ क्यों था?क्यों थे अजीब धब्बे? क्यों था उनकी टोपी पर खून? आखिर! किसने की यह भयावह साजिश? भारतीय जनता को सच जानने का पूरा हक है पर समझ के बाहर है कि यह गम्भीर बातें कभी चुनावी घोषणा पत्र के मुद्दे नहीं बनते। खैर, जो हो पर जनता अपने स्वःविवेक से सच जान चुकी है कि यदि नेताजी बाहर आते तो राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री ही बनते जो आज के भ्रष्ट

नेताओं को मंजूर न होता। वह देवपुरूष थे जिन्होंने परमार्थ किया और भारतमाता की गोद में चुपचाप विलीन हो गये। अब यूपी में योगी आदित्यनाथ का शासन है जिसमें प्रजा खुद को सुरक्षित महसूस करती है। बाकि अब जो भी पार्टी की जैसी मंशा हो उसका सही-सही आकलन तो जनता ही करेगी और समय उसका माकूल जवाब देगा। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश में पहले चरण का मतदान 10 फरवरी को होगा जबकि दूसरे चरण का मतदान 14 फरवरी को होगा। तीसरे चरण का मतदान 20 फरवरी को होगा जबकि चौथे चरण का मतदान 23 फरवरी को होगा। 27 फरवरी को पांचवें चरण का, 3 मार्च को छठे चरण का जबकि सातवें चरण का मतदान 7 मार्च को होगा। चुनावी नतीजे 10 मार्च को आएंगे। इसके साथ ही कोरोनावायरस को लेकर चुनाव आयोग की ओर से कई तरह के निर्देश भी दिए गए हैं।बता दें कि

पहला चरण-10 फरवरी, दिन-मंगलवार

कुल सीटें- 58

11 जिले- बागपत, मुजफ्फरनगर, शामली, मेरठ, हापुड़, गाजियाबाद, बुलंदशहर, मथुरा, आगरा, गौतम बुध नगर और अलीगढ़।

दूसरा चरण- 14 फरवरी, दिन-सोमवार

कुल सीटें- 55

9 जिले- संभल, अमरोहा, बिजनौर, सहारनपुर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, बदायूं और शाहजहांपुर।

तीसरा चरण- 20 फरवरी, दिन-रविवार

कुल सीटें- 59

16 जिले- कासगंज, एटा, फिरोजाबाद, हाथरस, मैनपुरी, फर्रुखाबाद, कन्नौज, इटावा, औरैया, कानपुर देहात, कानपुर नगर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, झांसी और ललितपुर।

चौथा चरण- 23 फरवरी, दिन-बुधवार

कुल सीटें- 60

9 जिले- लखनऊ, हरदोई, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, पीलीभीत, उन्नाव, रायबरेली, फतेहपुर, बांदा।

पांचवा चरण- 27 फरवरी, दिन-रविवार

कुल सीटें-60

11 जिले- बाराबंकी, बहराइच, श्रावस्ती, गोंडा, अयोध्या, अमेठी, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, कौशांबी, चित्रकूट, प्रयागराज।

छठा चरण-3 मार्च, दिन- गुरुवार

कुल सीटें- 57

10 जिले- बलरामपुर, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज, कुशीनगर, बस्ती, संतकबीरनगर, अंबेडकर नगर, गोरखपुर, बलिया, देवरिया।

सातवां चरण- 7 मार्च, दिन-सोमवार

कुल सीटें-54

9 जिले- जौनपुर, मऊ, आजमगढ़, संत रविदास नगर, वाराणसी, मिर्जापुर, गाजीपुर, चंदौली और सोनभद्र।

■■

दुनिया का सबसे ऊंची रणभूमि - सियाचिन

राकेश प्रताप सिंह

सियाचिन जहां दुश्मन की गोली से ज्यादा बेरहम मौत की वजह मौसम है। इस बर्फीले रेगिस्तान में जहां कुछ नहीं उगता, वहां सैनिकों की तैनाती का एक साल का खर्च ही सैकड़ो करोड़ रुपए आता है। क्योकि ये सामरिक दृस्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण इलाका है, सियाचिन के पूर्व मे चीन और पश्चिम मे पाकिस्तान है, सियाचिन पे नियंत्रण कर के भारतीय सेना बडे आसानी से चीन और पाकिस्तान दोनों की गतिविधियों पे नजर रखा पाती है और इसीलिए पिछले 30 साल से यहां भारतीय सेना पाकिस्तान के नापाक इरादों को नाकाम कर रही है।

सियाचिन में अक्सर दिन में तापमान शून्य से 30 डिग्री नीचे और रात में माइनस 70 डिग्री तक चला जाता है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, सियाचिन की रक्षा करते हुए 1984 से अब तक 860 से भी ज्यादा सैनिकों ने अपनी सर्वोच्च कुरबानी दी है।सियाचिन हिमालय के कराकोरम रेंज में है, जो चीन को भारतीय उपमहाद्वीप से अलग करती है। सियाचिन 76 किलोमीटर लंबा दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा ग्लेशियर है। 23 हजार फीट की ऊंचाई पर सियाचिन ग्लेशियर इंद्र नाम की पहाड़ी से शुरू होता है।सियाचिन ग्लेशियर के 15 किमी

पश्चिम में सलतोरो रिज शुरू होता है। सलतोरो रिज तक के इलाके पर भारतीय सेना का नियंत्रण है। सलतोरो रिज के पश्चिम में ग्योंग ग्लेशियर से पाकिस्तानी सेना का नियंत्रण शुरू होता है।

सियाचिन ग्लेशियर में भारतीय फौज की करीब 150 पोस्ट हैं, जिनमें करीब 10 हजार फौजी तैनात रहते हैं।आमतौर पर एक फौजी की सियाचिन पर सिर्फ 3 महीने के लिए ही तैनाती होती है, लेकिन तीन महीने की तैनाती के लिए भी फौजियों को 5 हफ्ते की खास ट्रेनिंग लेनी पड़ती है।

सियाचिन के लिए फौजियों की पहली ट्रेनिंग कश्मीर के खिल्लनमर्ग के गुज्जर हट में बने हाई एल्टीट्यूड वारफेयर स्कूल से शुरू होती है। इसी स्कूल में सेना के जवानों को बर्फ पर रहने, पहाड़ काट कर ऊंचाई पर चढ़ने की ट्रेनिंग दी जाती है। ट्रेनिंग पूरी हो जाने के बाद सैनिकों को सियाचिन ग्लेशियर से पहले बने बेस कैंप के सियाचिन बैटल स्कूल तक ले जाया जाता है।

सियाचिन बैटल स्कूल में पांच हफ्ते की विशेष ट्रेनिंग के बाद सियाचिन की चौकियों पर तैनाती के लिए उन्हें हेलिकॉप्टर से सफर करना पड़ता है। इन चौकियों पर रसद और गोला-बारूद की अपूर्ति भी हेलीकॉप्टर से ही की जाती है। कोई सैनिक बीमार पड़ जाए तो उसे बेस कैंप के अस्पताल में पहुंचाने के लिए भी हेलिकॉप्टर का ही इस्तेमाल किया जाता है।

सियाचिन में तैनाती के तीन महीने के दौरान सैनिकों को नहाने को नहीं मिलता, न वो दाढ़ी बना पाते हैं। हर रात अपनी चौकी के सामने से उन्हें बर्फ हटानी पड़ती है, क्योंकि बर्फ नहीं हटाई जाए तो बर्फ के दबाव से जमीन फटने का खतरा होता है। पानी पीने के लिए बर्फ पिघलानी पड़ती है। सैनिकों के पास एक खास तरह की गोली होती है, जिसे पिघले पानी में डालकर उसे पीने लायक बनाया जाता है।

मुश्किल ट्रेनिंग और जज्बे के बावजूद सैनिकों को हाइपोक्सिया, हाई एल्टीट्यूड एडिम जैसी बीमारियां हो जाती हैं, जिससे फेफड़ों में पानी भर जाता है, शरीर के अंग सुन्न हो जाते हैं।सियाचिन में भारतीय फौजों की किलेबंदी इतनी मजबूत है कि पाकिस्तान चाहकर भी इसमें सेंध नहीं लगा सकता। दरअसल, यह सफलता है 1984 के उस मिशन मेघदूत की है, जिसे भारतीय सेना ने सियाचिन पर कब्जे के लिए शुरू किया था। शह और मात के इस खेल में भारत ने पाकिस्तान को जबरदस्त शिकस्त दी।

दुनिया के सबसे ऊंचे रणक्षेत्र सियाचिन में भारत और पाकिस्तान की फौजों पिछले 30 साल से आमने-सामने डटी हुई हैं। 1984 से पहले सियाचिन में यह स्थिति नहीं थी, वहां किसी भी देश की फौज नहीं थी।

1949 के कराची समझौते और 1972 के शिमला समझौते में दोनों देशों के बीच यह तय हुआ था कि प्वाइंट न्च 9842 के आगे के दुर्गम इलाके में कोई भी देश नियंत्रण की कोशिश नहीं करेगा। तब तक उत्तर में चीन की सीमा की तरफ प्वाइंट न्च 9842 तक ही भारत पाकिस्तान के बीच सीमा चिन्हित थी, लेकिन पाकिस्तान की नीयत खराब होने लगी। उसने इस इलाके में यूरोप के पर्वतारोही दलों को जाने की इजाजत देनी शुरू कर दी, जिसने भारतीय सेना को चौकन्ना कर दिया।

80 के दशक से ही पाकिस्तान ने सियाचिन पर कब्जे की तैयारी शुरू कर दी थी। बर्फीले जीवन के तजुर्बे के लिए 1982 में भारत ने भी अपने जवानों को अंटार्कटिका भेजा। 1984 में पाकिस्तान ने लंदन की कंपनी को बर्फ में काम आने वाले साजो-सामान की सप्लाई का ठेका दिया। भारत ने 13 अप्रैल 1984 को सियाचिन पर कब्जा करने के लिए ऑपरेशन मेघदूत शुरू कर दिया। पाकिस्तान 17 अप्रैल से सियाचिन पर कब्जे का ऑपरेशन शुरू करने वाला था। हालांकि भारत ने तीन दिन पहले ही कार्रवाई कर उसे हैरान कर दिया, लेकिन ये ऑपरेशन आसान नहीं था। लेकिन हमारे जाबाज जवानों ने ये कर दिखाया और तब से भारतीय सेना इस इलाके को नियंत्रित करती है, बीच मे कई प्रयास पाकिस्तानी सेना की तरफ से किये गए लेकिन हर बार हमारे जबाजो के होसलो के आगे पाकिस्तान को मुँह की खानी पड़ी.

जय हिंद !!!

■■

ढाई आखर

संजय भारद्वाज

प्रेम अबूझ, प्रेम अपरिभाषित..., प्रेम अनुभूत, प्रेम अनाभिव्यक्त..। प्रेम ऐसा मोहपाश जो बंधनों से मुक्त कर दे, प्रेम क्षितिज का ऐसा आभास जो धरती और आकाश को पाश में आबद्ध कर दे। प्रेम द्वैत का ऐसा डाहिया भाव कि किसीकी दृष्टि अपनी सृष्टि में देख न सके, प्रेम अद्वैत का ऐसा अनन्य भाव कि अपनी दृष्टि में हरेक की सृष्टि दिखने लगे।

ब्रजपर्व पूर्ण हुआ। कर्तव्य और जीवन के उद्देश्य ने पुकारा। गोविंद द्वारिका चले। ब्रज छोड़कर जाते कान्हा को पुकारती सुधबुध भूली राधारानी ऐसी कृष्णमय हुई कि 'कान्हा, कान्हा' पुकारने के बजाय 'राधे, राधे' की टेर लगाने लगी। अद्वैत जब अनन्य हो जाता है राधा और कृष्ण, राधेकृष्ण हो जाते हैं। योगेश्वर स्वयं कहते हैं, नंदलाल और वृषभानुजा एक ही हैं। उनमें अंतर नहीं है।

रासरचैया से रासेश्वरी राधिका ने पूछा, 'कान्हा, बताओ, मैं कहाँ-कहाँ हूँ?'

गोपाल ने कहा, 'राधे, तुम मेरे हृदय में हो।' विराट रूपधारी के हृदय में होना अर्थात अखिल ब्रह्मांड में होना।..'तुम मेरे प्राण में हो, तुम मेरे श्वास में हो।' जगदीश के प्राण और श्वास में होना अर्थात पंचतत्व में होना, क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर में होना।..'तुम मेरे सामर्थ्य में हो।' स्रष्टा के सामर्थ्य में होना अर्थात मुरलीधर को गिरिधर करने की प्रेरणा होना। कृष्ण ने नश्वर अवतार लिया हो या सनातन ईश्वर होकर विराजें हों, राधारानी साथ रहीं सो कृष्ण की बात रही।

'लघुत्तम से लेकर महत्तम चराचर में हो। राधे तुम यत्र, तत्र, सर्वत्र हो।'

श्रीराधे ने हँसकर पूछा, 'अच्छा अब बताओ, मैं कहाँ नहीं हूँ?' अनिरुद्ध ने गंभीर स्वर में कहा, ' तुम मेरे भाग्य में नहीं हो।'

प्रेम का भाग्य मिलन है या प्रेम का सौभाग्य बिछोह है? प्रेम की परिधि देह है या देहातीत होना प्रेम का व्यास है?

परिभाषित हो न हो, बूझा जाय या न जाय, प्रेम ऐसी भावना है जिसमें अनंत संभावना है।कर्तव्य ने कृष्ण को द्वारिकाधीश के रूप में आसीन किया तो प्रेम ने राधारानी को वृंदावन की पटरानी घोषित किया। ब्रज की हर धारा, राधा है। ब्रज की रज राधा है, ब्रज का कण-कण राधा है, तभी तो मीरा ने गोस्वामी जी से पूछा था, 'ठाकुर जी के सिवा क्या ब्रज में कोई अन्य पुरुष भी है?'

प्रेमरस के बिना जीवनघट रीता है। जिसके जीवन में प्रेम अंतर्भूत है, उसका जीवन अभिभूत है। विशेष बात यह कि अभिभूत करनेवाली यह अनुभूति न उपजाई न जा सकती है न खरीदी जा सकती है।

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय

राजा परजा जेहि रूचै, सीस देइ ले जाय।

इस ढाई आखर को मापने के लिए वामन अवतार के तीन कदम भी कम पड़ जाएँ!

■■

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

डा.आर.एस.टाक

संयोजक-विश्व ब्रह्मऋषि महासंघ
चेयर पर्सन- एस्ट्रो लेब
A-126,नित्यानंद नगर,वैशाली नगर
जयपुर(राज.) - 302021
फोन - 8209537712

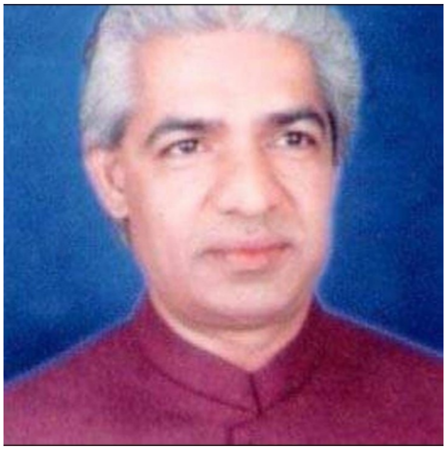

एंटीक वस्तुएं बिक्री के लिये उपलब्ध। दिए गए फोन नंबर से जानकारी लें।

डिजिटल युग में बढ़ता विद्वेष का दायरा

सोनम लववंशी
भोपाल

कार्ल मार्क्स ने धर्म को अफ़ीम कहा था। वर्तमान दौर में सोशल मीडिया 'अफ़ीम' का काम कर रही है। ऐसे में आज भले हमारे सम्पर्क का दायरा बढ़ गया है, लेकिन दिलों में नफ़रत की खाई पनपती जा रही है और कहीं न कहीं सोशल मीडिया नफ़रत फैलाने का जरिया बनता जा रहा हैं। इतना ही नहीं यहां कई बार किसी अपराध की प्रकृति ऐसी होती है, जिसके जिम्मेदार लोगों को तो कानून के कठघरे में लाया जा सकता है, लेकिन उससे सामाजिकता की व्यापक छवि को जो नुकसान पहुंचता है, उसकी भरपाई आसान नहीं होती। इंटरनेट के विस्तार के साथ-साथ इसकी उपयोगिता से इंकार नहीं किया जा सकता, लेकिन इसके समांतर साइबर दुरुपयोग के जितने स्तर सामने आ रहे हैं, वे अपराधों का एक नया संजाल खड़ा कर रहे हैं। ऐसे में देखें तो विज्ञान ने तरक़्क़ी तो बहुत कर ली है पर विज्ञान वरदान साबित होगा या अभिशाप? यह हमें ही तय करना है। विडंबना देखिए जिस तकनीकी का इजात मानव की भलाई के लिए किया गया था आज वही नफ़रत का ज़रिया बन गया है। बाजारवाद के इस दौर में हर चीज़ बिकाऊ हो गई है और शायद इसी मानसिकता ने 'बुल्ली बाई' जैसे ऐप को इज़ात कर लिया, लेकिन हमारी सहनशीलता देखिए कि इस अनैतिक अपराध पर भी हम खामोश बैठे है। हमारी सारी संवेदनाएं

मर गई है। हमे तो बस धर्म के नाम पर राजनीति करनी है। वर्तमान दौर में इंसानियत को भी धर्म के आधार पर बांटने का राजनीतिक खेल खेला जा रहा है। पर हमें इससे भला कहाँ फर्क पड़ने वाला है? हमें तो धर्म के नाम पर राजनीति करने की आदत सी हो गई है। इसीलिए तो अब विरोध भी धर्म देखकर किया जाने लगा है। पर क्या इंसानियत धर्म से बढ़कर हो गई है? हम तो वसुधैव कुटुम्बकम की परंपरा को मानने वाले लोग है जहां हर जीव पर दया की जाती है। फिर कैसे किसी धर्म विशेष की महिलाओं पर अन्याय होता देख हमारा सभ्य समाज अंधा हो गया है। कहां गई वे महिलाएं जो आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने की बड़ी बड़ी ढींगे हांकती है। जो विपक्ष बिना मुद्दे के भी शोर मचाते नहीं थकता था वह क्यों खामशो हो गया है? हर छोटी बड़ी बात में जो न्यायालय स्वयं संज्ञान ले लेता है आज वह भी मानो अपनी आंखों पर पट्टी बांध रहा हो। सवाल कई है पर सभी की जुबां मौन है और कई बार इसी मौन को 'स्वीकृति' का प्रतीक मान लिया जाता है। ऐसे में इन मुद्दों पर मुखर होने की जरूरत है और यह समझने की आवश्यकता कि आख़िर क्यों पढ़े-लिखें युवा भी ऐसे कामों में संलिप्त हो रहें हैं। वैसे देखा जाए तो यह खामोशी महिलाओं के लिए सबसे बड़ा अभिशाप बन गई है। जुर्म करना अपराध है लेकिन जुर्म होते देख कर खामोश हो जाना भी बड़ा अपराध है।

कल्पना कीजिये कि एक महिला पर क्या बीती होगी जब नए वर्ष की सुबह में उस महिला ने खुद को नीलामी की वस्तु के रूप में देखा होगा। जहां उसकी बोली लगाई जा रही है, उस पर गंदे गंदे कमेंट किये जा रहे है।सोशल मीडिया पर उसकी क़ीमत तय की जा रही है। यह कोई कल्पना नहीं बल्कि वर्तमान दौर की सच्चाई है। जिसमें 'बुल्ली बाई' नामक ऐप के द्वारा 100 से अधिक मुस्लिम महिलाओं की तस्वीरों को नीलामी के लिए डाल दिया गया। उनकी बोली लगाई जा रही थी। इस ऐप में अभिनेत्री शबाना आज़मी से लेकर उच्च न्यायालय के न्यायधीश की पत्नी के साथ ही कई जानी मानी पत्रकार और राजनेता की तस्वीर भी शामिल थी। ताजुब की बात है कि पिछले छह महीने में यह दूसरी बार है जब इस तरह की घटना को अंजाम दिया गया है। इससे पहले 'सुल्ली डील' में भी इसी तरह महिलाओ को टारगेट किया गया था। वहीं अब इसे महज संयोग कहें या साज़िश सवाल तो यह उठता है कि यह ऐप तब लाया गया जब पंजाब, उत्तरप्रदेश व उत्तराखंड जैसे राज्यों में चुनाव का माहौल है। इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि कहीं चुनाव का माहौल बिगाड़ने की यह साज़िश तो नहीं? क्योंकि सुल्ली डील को भी तभी लांच किया गया था जब पश्चिम बंगाल में चुनाव चरम पर था।

वहीं आंकड़ों के दृष्टिकोण से जब हम सोशल मीडिया यानी इंटरनेट और महिलाओं को देखते हैं। फिर भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के मुताबिक मार्च 2021 के अंत तक भारत में लगभग 82.5 करोड़ इंटरनेट यूजर थे। उनमें से अधिकांश वास्तविक हैं, जिनमें शरारती तत्वों की संख्या बहुत कम है। लेकिन ऐसे शरारती तत्वों में राष्ट्र, उसकी राजनीति, अर्थव्यवस्था और नागरिकों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में तबाही मचाने की घातक क्षमता होती है। इतना ही नहीं ये सामाजिक ताने-बाने को ध्वस्त करने के लिए दबाव डाल सकते हैं और ऐसा ही कुछ ओपन-सोर्स ऐप बुल्ली बाई में भी देखा जा सकता है, जिसे 'मुस्लिम महिलाओं की नीलामी' के लिए वेब प्लेटफॉर्म गिटहब पर होस्ट किया गया। इतना ही नहीं यह हमारे समाज और व्यवस्था की कड़वी सच्चाई है कि साइबर ब्लैकमेलिंग, इंटरनेट पर परेशान करना और डराना-धमकाना एक बहुत बड़ा मुद्दा है, जिससे महिलाओं और उनके परिवारों को काफी तनाव होता है और अब ये बातें सिर्फ महानगरों तक सीमित नहीं है या किसी विशेष जाति या समुदाय के लिए विशिष्ट भी नहीं। एनसीआरबी के आंकड़ों की ही बात करें तो 2020 के दौरान भारत में कुल साइबर अपराध की संख्या 50,035 थी और विशेष रूप से महिलाओं के खिलाफ अपराध केवल 10,405 थे। मालूम हो कि ये आंकड़े जमीनी हकीकत का एक अंश मात्र हैं और कई बार महिलाएं समाज में बदनामी के डर से भी शिकायत नहीं करती हैं, क्योंकि मर्दवादी भारतीय समाज में पीड़ित महिलाओं पर ही इल्जाम मढ़ दिया जाता है।

इसके अलावा देखें तो इस बार के बुल्ली बाई ऐप ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि अपराध की कोई उम्र नहीं होती और अपराध करने वाले की कोई जाति नहीं। इस ऐप में भी जिस तरह से 18-21 साल के युवा विद्यार्थियों के नाम सामने आ रहें हैं। वह यह सोचने पर

मजबूर करते हैं कि आख़िर हमारे देश के नौजवान किस राह पर बढ़ रहे हैं और इसके पीछे कारण क्या? इसकी तह तक जाना आज के वक्त की जरूरत है। आख़िर कोई पढा-लिखा युवा दिमागी रूप से जहरीला बन रहा तो उसके लिए जिम्मेदार धर्म है या व्यवस्था? इसकी स्पष्ट रूपरेखा भी अब तय होनी चाहिए, क्योंकि यूं ही कोई रास्ता तो भटकता नहीं और हां अगर हम यह मानकर इस बार भी बैठ गए कि अभी बोली तो मुस्लिम महिलाओं की लगी है हमें क्या? तो यह एक जिम्मेदार समाज का सबसे बड़ा नकारापन होगा क्योंकि ऐसी परिस्थियां धर्म और मजहब नहीं देखती। वहीं इस मामले में एक पहलू यह है कि किसी ऐप के जरिए महिलाओं को अपमानित करने जैसे अपराधों के पीछे जो प्रवृत्ति काम करती है, वह एक जटिल समस्या है और यह समझना मुश्किल नहीं है कि समुदाय विशेष की महिलाओं को निशाना बना कर उन्हें अपमानित करने, उनका भयादोहन करने के पीछे मुख्य रूप से सांप्रदायिक नफरत की भावना काम करती है। इससे एक पूरे समुदाय और खासकर महिलाओं के भीतर अपनी स्थिति को लेकर कैसी भावना पैदा होती होगी, इसका सहज अंदाजा लगाया जा सकता है। ऐसी हरकतों से चौतरफा नुकसान के सिवा और क्या हासिल होगा? यह हम और आप सभी समझ सकते हैं और ऐसे अपराध में सच यह भी है कि इस तरह का अपराध करने वाले लोग न्यूनतम मानवीय संवेदनाओं से भी दूर होते हैं और प्रथम दृष्टया इनके निशाने पर किसी खास समुदाय की महिलाएं हो सकती हैं, लेकिन आखिरकार ये सभी महिलाओं के खिलाफ कुंठा से भरे होते हैं। साइबर संसार के विस्तृत होते दायरे में ऐसे अपराधियों की गतिविधियों पर तत्काल लगाम नहीं लगाई गई तो आने वाले वक्त में डिजिटल दुनिया को लेकर एक खास तरह का असुरक्षाबोध जोर पकड़ेगा।

■■

समस्त क्षेत्रवासियों को नव वर्ष व
26 जनवरी गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉक्टर रविरंजन

जमानिया जनपद गाज़ीपुर

पति-पत्नी और वो

जयश्री बिरमी

किशोरावस्था से निकलने से पहले ही आजकल बच्चें अपने साथी के बारे में सोच ने लगते हैं, सभी का अपना अपना खयाल और सोच होती हैं।कोई सुंदरता को प्रधान्य देगा कोई बुध्धिमत्ता को,किसी के लिए सिर्फ लड़की या लड़का होना ही काफी हैं।कोई अच्छे स्वभाव की तमा रखता हैं ,तो कोई संवेदनशीलता की।वैसे भी विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण एक सामान्य व्यक्ति के लिए आम बात हैं।अगर कोई शारीरिक या मानसिक त्रुटि न हो तो।

अब तो शादी से पहले गर्ल फ्रेंड-बॉय फ्रेंड के लिव-इन (माफ कीजिएगा अपनी संकृति के बाहर के वाकयों के लिए मुझे हिंदी शब्द नहीं मिले)संबंधों में विश्वास करने लगे हैं आज के नवयुवा।पहले शादी घरके बड़े बुजुर्ग तय करते थे तो एक दूसरे को देखने या मिलने के लिए मौके ढूंढने पड़ते थे,वो भी चोरी चोरी,और अगर किसी से प्यार हो गया होता था तो पहले चोरी चोरी मिल लेते थे और जब रिश्ते का सच उजागर होता था, तो पहले बाहर जाने पर प्रतिबंध,छोटे या बड़े भाई बहन का पहरा और पता नहीं क्या क्या हुआ करता था!

और अब तो पहले दो तीन चार पुरुष या स्त्री मित्रों के साथ प्रयोगात्मक संबंध के बाद शादी,वह भी उन

प्रयोगात्मक संबंधों में से या कोई ओर,अपनी या घरवालों की पसंद से शादी होती हैं।

शादी आज की हो या बीते कल की, किंतु ब्रह्म सत्य एक ही हैं,बिल्ली कौन मरता हैं? यानि कौन जीतता हैं आरंभिक युद्ध को? घर में किसकी चलेगी यह अहम प्रश्न हैं,स्मान्यतः पुरुष ही बाजी मरता हैं।दफ्तर से आए तो एक जंग जीतके आने का आडंबर ले विजयी हो गृह प्रवेश देख सब को शौर्यभाव का अनुभव होने लगता हैं,उपर से मातृ प्रेम वश मैया पूछेगी 'थक गए हो बेटे ' और विजय मुस्कान एक बेचारगी में ढल जायेगी।फिर पानी और चाय नाश्ते के सिलसिले बाद ,पजामा या लूंगी मांगने की प्रक्रिया के अंतर्गत, अगर लूंगी निकाल के रखी हैं तो'.रोज ही बोलना पड़े कि आज में लूंगी नही पजामा पहनूंगा 'और पजामा निकाल के रखा हैं तो उसका उल्टा लूंगी की मांग होगी।

एक बहुत पुरानी कहानी सुनी थी।पड़ोस के घरसे रोज शाम 6 बजे आवाज आती थीं,हाथ मुंह धोने के लिए पानी गरम किया हैं क्या? वरना.... ' और वह गरीब बिचारी दौड़ के आ आंगन में पानी रख तौलिया लिए खड़ी ,बेचारगी से पानी ज्यादा या कम गर्म होने की टिप्पणी सुन ने को तैयार खड़ी स्त्री मूर्ति की कल्पना हो ही जाती थी।

कई सालों तक ये आवाज का सिलसिला चलता रहा किंतु अब तो दोनों की उम्र भी ढलने लगी थी लेकिन श्याम 6 बजे की आवाज में कोई अंतर नहीं आया था।

बस आ गया वो दिन जिसे क्रांति कह सकते हैं।' पानी गरम किया क्या, वरना...' और सामने से शेरनी सी गुर्राहट ' नहीं किया , वरना क्या ?' और सामने से शेर की जगह मेमने की आवाज आई 'ओ जी कुछ नहीं मैं खुद ही कर लूंगा जी', जो काम पहले ही दिन हो जाना चाहिए था ,उसमे सालों लग गए। सामान्यतः घरों में अनुकूलन नहीं देखने मिलता,या तो पत्नी हावी हैं या पति हावी हैं। गृहस्थ जीवन में, समायोजन नहीं होता हैं बस मैं कहूं वही सही का माहोल रहता हैं,अगर पत्नी की राय के अनुसार चलने से मर्दानगी में कोई कमी दिख जायेगी।वैसे अगर पति हावी हैं स्त्रीत्व में कमी दिख जाने का डर रहता हैं।इसी लिए तो सभी बिल्ली मरने को उतावले रहते हैं,ताकि ताउम्र उसी का राज रहे घर में।

सही में तो समन्वय,कभी मान लो कभी मनवालो वाला व्यवहार ही सही होता हैं,एक दूसरे के पूरक बने,हरिफ क्यों बने।प्रतिद्वंदी क्यों बने? ये जो अहम हैं वही हैं पति-पत्नी के बीच 'वो'........

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

शिवेनन्द पाण्डेय

किसान मोर्चा भाजपा नेता
चंदौली

अंतिम फैसला

डॉ. रमेश यादव

'सुनो जी आपसे एक बात कहनी थी ! कहीं मुन्ना ने आपसे इस बारे में कुछ कहा तो नहीं ? संकोच कर रहा था, इसलिए मुझसे बोला कि आपसे मैं बात कर लूँ. '

' नहीं तो. इतने दिनों के बाद आया और सिर्फ एक ही दिन रूका. कह रहा था कि छुट्टियों की समस्या है इसलिए जलदी जाना चाहता है. मगर इस बार कुछ उदास और बेचैन लग रहा था। कहीं बहू से कुछ अनबन तो नहीं हुई है ना ? वह भी नौकरी पर जाती है, ऊपर से छोटा बच्चा भी अब आ गया है, परेशानी तो काफी होती होगी। शायद इसीलिए मुन्ना अब हमारे खर्चे के लिए पैसे भी नहीं भेजता। '

' हां मुन्ना के पापा, कुछ तनाव में था. संकोच वश वह आपसे ठीक से बोल भी नहीं पाया। दरअसल किराए के घर की बजाय, अब वे अपना खुद का घर खरीदना चाहते हैं. पैसों के बंदोबस्त को लेकर दोनों में काफी समय से खटपट चल रही है। बहू काफी जिद कर रही है. अंततः उनका निर्णय यह हुआ है कि गांव

का घर और जमीन बेचकर शहर में नया घर ले लें और हम सभी मिलकर एक साथ रहें। अपने बलबूते पर शहर में घर लेना उनके बस की बात नहीं इसलिए मुन्ना मजबूर हो गया। कुछ भी हो, मुन्ना के पापा, मुझे तो उनकी यह सोच बहुत अच्छी लगी। यहां गांव में हम भी तमाम परेशानियां ही तो झेल रहे हैं, आखिर बुढ़ापे में हमें भी तो सहारा चाहिए ना ! पोते को देखने के लिए मन तरसता रहता है !'

मुन्ने की मां बात तो ठीक है पर इतना बड़ा निर्णय लेना था, तो बहू क्यों नहीं आई मुन्ने के साथ ? पोते को लेकर आज तक वह एक बार भी गांव नहीं आई। मुन्ना भी तो लगभग दो साल के बाद आया था। मेरी राय तुमसे अलग नहीं है आखिर कितनी मेहनत-मजदूरी करके और बेहद कठिन परिस्थितियों से गुजरते हुए हमने मुन्ने को पढ़ाया ताकि वह अच्छी जिंदगी जी सके। अब मुन्ना और बहू दोनों छोटी-मोटी नौकरी करते हुए अपना जीवनयापन कर रहे हैं, यह अच्छी बात है ना। अब तो हमारा पोता भी आ गया है, तो मैं भला इस नेक काम में अडंगा क्यों डालूंगा ? मगर आजकल के बच्चों पर अधिक भरोसा नहीं किया जा सकता, ज़माना खराब हो गया है। गांव का यह छोटा-सा घर और छोटी-सी खेती ही तो हमारा आखिरी सहारा है। इसे भी बेच देंगे तो हमें बच्चों पर निर्भर रहना पड़ेगा, जो मुझे उचित नहीं लगता। बहू का मन आज ठीक है कल को मन बदल गया तो हम कहां जाएंगे ? ' नहीं चाहते हुए भी घुमड़ती पीड़ा की गठरी आखिर खुल ही गई, यही तो जीवन का यथार्थ है।

' सुनो जी, आप तो हमेशा बेमतलब की बातें सोचते रहते हैं। आखिर हमारा खून है, क्या हमें वह सड़क पर फेंक देगा ? वैसे भी तो उसने कहा है कि हम सभी एक साथ रहेंगे। दो महीने बाद वह फिर आएगा, तब तक आपको राजी करने की जिम्मेदारी मुझ पर सौंप गया है। मुझे भी तो अब अपने पोते के साथ रहना है जी।' मुन्ने की मां की आंखों में उम्मीदों के दीप जलने लगे थे मगर वातावरण का सन्नाटा भयभीत भी कर रहा था।

कोई उपाय सामने न आते देख मुन्ने के बाबा ने चुप रहने में ही अपनी भलाई समझी। मगर मुन्ने की मां भावनात्मक होकर रोज इस मसले को लेकर तगादा लगाए रहती। रोज की तरह आज भी कुदाल- फावड़ा लेकर वे दोनों खेतों की मेड़ दर मेड़ पार करते हुए आगे बढ़ रहे थे। अंततः उनका अपना ज़मीन का टुकड़ा आ ही गया, जिसे वे अपने खून पसीने से सींचते थे और फसल उगाते थे। मगर सालभर के जीवनयापन के लिए यह उपज उनके लिए कम पड़ जाती थी इसलिए दूसरे के खेतों में वे हरवाही भी करते थे। काफी देर तक दोनों अपने खेत के उस टुक़ड़े को निःशब्द होकर निहारते रहे। शाम को थके-हारे गोधूलि की बेला पर जब वे घर लौटे तब भी उनमें अबोला कायम था। पूरे दिनभर दोनों के बीच मौन की नदी पसरी रही, शायद किसी निर्णय पर पहुंचने के लिए मन ही मन वे धुन रहे थे। मगर आपसी तनातनी के कारण उनके बीच यह अज़नबी अबोला काफी दिनों तक चलता रहा।

मुन्ने के बाबा को अब यह चुप्पी बर्दास्त नहीं हो रही थी। अंततः अपनी तरफ से पहल करते हुए बोले -

' मुन्ने की मां, साहूकार से मैंने बात कर ली है। वह घर और खेत एक साथ खरीदने को तैयार है मगर उसकी शर्त यह है कि पैसे मिलते ही हमें घर और खेत तुरंत उसके हवाले करना होगा।'

' जब बेचना है तो इतना क्यों सोचना ? दे देंगे उसे जमीन उसी दिन, मगर आपका निर्णय जब पक्का होगा तब ना ! दो नावों पर पैर रखकर कभी सफर तय होता है क्या ? जो होगा देखा जाएगा मुन्ने के पापा, अब आप मन को कठोर करके निर्णय लो कि यह ज़मीन बेचनी है।'

जवाब में दोनों के बीच काफी वाद-विवाद तथा विमर्श होता रहा। रोज किसी ना किसी बहाने यह बात मुंह बाए खड़ी हो जाती और उनकी जिंदगी अशांत हो जाती। सुकून की रोटी जैसे उनके नशीब की परीक्षा ले रही थी। 'मन कस्तुरी, जग कस्तुरी, बात कहां होती सबकी पूरी....।'

जीवन में तजुर्बों की झुर्रियों ने उन्हें सिखा दिया था कि जो बादल बरसते नहीं, वो सैलाब बनकर तबाही मचा देते हैं। धीरे-धीरे उनका अपने घर और खेत से मोहभंग होने लगा था। मोहभंग होना मतलब अपनी आस्थाओं और सपनों का टूटना होता है, जो बड़ा खतरनाक होता है। अच्छे खासे संबंधों में भी दरारें पड़ जाती हैं। इन्हीं आस्थाओं और विश्वास के सहारे ज़िंदगी की नैय्या विषम परिस्थितियों में भी हौल-हौले आगे बढ़ती हुई एक अनजाना सुख देती रहती है। अपने गांव, घर-खेत के प्रति उनका मोहभंग होना भी ऐसा ही एक हमला था,

जो ऐसे वक्त पर हुआ था जब उनका शरीर थक चुका था। अपनी रची हुई उनकी दुनिया अनायास ही अप्रासंगिक हो गई थी। अब अपने नए सपनों के सहारे वे दोनों अपनी झीनी-झीनी चदरिया बुन रहे थे।

अंतत वह दिन भी आया जब मुन्ना सारी तैयारी के साथ गांव आया और कुछ दिनों में ही घर-खेत का सौदा हो गया। जो पैसे मिले उसे लेकर वे तीनों शहर की ओर चल दिए। मुन्ना ने पहले से ही शहर में नया घर तलाश लिया था इसलिए नए घर में नई दुनिया बसाने में ज़्यादा वक्त नहीं लगा। कुछ वर्षों तक वे सभी एक छत के नीचे जीवन गुजारते रहे।

मगर किस्मत भला किसके बस में होती है ! समय ने करवट बदला और एक दिन वह भी आया जब बहू के माता-पिता भी बुढ़ापे तथा बीमारी की मजबूरी के चलते अपनी बेटी के साथ रहने की जिद करने लगे। उनका अपना कोई बेटा नहीं था। दरअसल बेटी का नया घर खरीदने के लिए कुछ मदद उन लोगों ने भी तो की थी। बहू के सामने कोई अन्य विकल्प नहीं था, अतः बेटी होने का फर्ज़ अदा करने का भूत उस पर सवार हो चुका था। माता-पिता की बची ज़र-ज़मीन की आखिर वही वारिस भी तो थी। उसने अपना मन बना लिया था कि उसके सास-ससूर अलग से किराए के घर में रहें या वृध्दाश्रम में चले जाएं। इस बात को लेकर घर में अब नया बवाल मच गया था। छोटा-सा घर, सीमित आय और तंग साधनों ने संबंधों में एक नई खटास पैदा कर दी थी। जो घर कभी शांत था उसे अशांति की नजर लग गई थी अतः मुन्ना की रातों की नींद हराम हो गई थी। काफी वाद-विवाद और झगड़े-झंझट के बाद भी कोई नतीजा न निकलता देख बहू ने अपने पति को अंतिम फैसला सुनाया -

'अब मेरे माता-पिता हमारे साथ रहेंगे, आपके माता-पिता को हमने पांच सालों तक संभाला ना ! यदि आपको बड़ी आपत्ति हो तो आप अपने माता-पिता के साथ अलग किराए के मकान में रह सकते हैं। यह घर तो मेरे नाम पर है।'

मुन्ना के माता-पिता अवाक होकर इस बात को सुन रहे थे। वे ठगा हुआ- सा महसूस कर रहे थे। धीरे-धीरे सरकती हुई वह निस्तेज शाम कहर बरपा रही थी, ऊपर से ठंड और बारिश की जुगलबंदी भी जारी थी। तूफान भरी वह रात किसी तरह बीती। सुबह देखते हैं कि मुन्ने के माँ-बाबा घर में नहीं हैं। चार दिनों तक धुआंधार बारिश होती रही। चारो ओर प्रलय का माहौल था जिसके कारण कई घर-परिवार उजड़ गए। कई लोग पानी की तेज रफ़्तार में बह गए थे। मुन्ने ने भी अपने माता-पिता की गुमसुदा रिपोर्ट लिखाई मगर कोई सुराख नहीं मिला। दिन, महीने, साल बीतते रहे आखिर सात साल बाद सरकार ने गुमसुदा की रिपोर्ट को मिटाकर उन्हें मृत घोषित कर दिया, जिनके बारे में कोई पुख़्ता जानकारी नहीं मिली। इनमें मुन्ना के माता-पिता का भी नाम शामिल था। ■■

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

राम मनोहर राम

प्रधान ग्राम रेवसा

कर्मठ और जुझारू

'भाग्यशाली लोग'

डॉ. प्रमोद शुक्ल

'संतान सुख से वंचित रह जाने वाले लोग बड़े दुर्भाग्यशाली होते हैं' महाराज का यह वचन सुनते ही श्रोताओं में से सात-आठ लोगों का समूह उठकर विपरीत दिशा की ओर चल दिया। महाराज ने आवाज दी,'क्या हुआ क्या आप लोगों की कोई संतान नहीं है ?' समूह में से पलटकर एक व्यक्ति ने महाराज से कहा,'नहीं महाराज हम सबको दो-दो, तीन-तीन संतानें हैं आपके अनुसार हम सभी भाग्यशाली हैं।' इस पर महाराज ने पूछा,'फिर आप लोग उठकर क्यों जा रहे हैं ?' समूह के व्यक्ति ने कहा,'हम सभी वृद्धाश्रम में रहते हैं और वहाँ का गेट बंद होने का समय हो गया है।'

नव वर्ष के अभिनन्दन में

नव वर्ष के अभिनंदन में-
शीतल नवल मलय है बहती।
नवल विहग कूजित नव लय में,
मधुर सृष्टि की धुन है बजती।

बाल अरुण मुस्काता नभ में,
देकर किरणें हल्की-हल्की।
धरती का चुंबन कर हौले,
सजग कर रही सारी सृष्टि।

नव कलियां खिलती वन उपवन,
सुरभित करतीं सारी सृष्टि।
मन-मयूर भी नाचे धिन-धिन,
देते शुभ कामना पलछिन।

नव आशा के दीप जगे हैं,
नव संकल्प की लड़ियां सजतीं।
जगमग करते तन मन सारे,
नव खुशियां राहों में बिछतीं।

सजग सलोने सारे बंदे,
मिलकर उन्नति की राह सजायें।
ना कहीं द्वेष, न मैल हो मन में,
प्यार से मेल सब देश सजायें।

अलका अग्रवाल

आओ उगायें फसल प्यार की।

आओ उगायें फसल प्यार की।

क्रोध के न बीज हों,
जलन की ना हो खाद।
सद्भावना के बीच हों,
विनम्रता की खाद।
आओ उगायें फसल प्यार की।
क्रोध, लोभ, मद, मोह की,
पतवार को जड़ से उखाड़ें।
बस प्यार के बीज बोयें,
सुख शांति की फसल काटें।
आओ उगायें फसल प्यार की।

सेवा की धूप हो,
सद्भावना का सिंचन।
दयालुता की हवा हो,
सज्जनता का अंचल।
आओ गाय फसल प्यार की।

अंकुर जब फूटेगा
दिलों में प्यार का।
पेड़ लहलहायेगा
सुखी संसार का।
आओ उगायें फसल प्यार की।

हरे भरे पेड़ होंगे
जीवन की खुशहाली के।
रंग-बिरंगे पुष्प पुष्पित होंगे,
समृद्धि सुख शांति के।
आओ उगायें फसल प्यार की।

वृक्ष के फल होंगे
सब के ही सांझी।
जाति धर्म का भेद ना हो,
सबके बने हम साथी।
आओ उगायें फसल प्यार की।

■ ■

नववर्ष का आगमन

नई साल की यह है नई कविता
जीवन में बह खुशियों की सरिता
नया भोर है नई हो मन मे चंचलता
हों प्रफुल्लित सब में हो कुशलता

अब नया साल फिर से मनायेंगे
फिर से सोई खुशियां जगायेंगे
अपनें कर्तव्यों को याद दिलायेंगे
अब 20 2 2 सबकी मंगलमय हो,
यही ईश्वर से हम दुआ मनायेंगे

अब न आये कोई भी संकट की साल
जिसने सभी को कर दिया था बेहाल
2021ने कई खड़े कर दिए थे सवाल
लॉकडाउन ने सबके किये थे बुरे हाल

बूढ़ा दिसम्बर, जवाँ जनवरी का आ,
गया 21वीं सदी का 2022 वां साल
नया पल,नया सवेरा सभी हों खुशाल
ये प्रार्थना करेगें शुभ आय नया साल

अब हर उपवन हमारा खिला रहे
हर पल खुशियों का मेला लगा रहे
तम नही प्रकाश का दीप जला रहे
2022 वां साल हर वला से टला रहे
खुशियों की सरिता का नीर बहता रहे

■■

कवि अरुण चक्रवर्ती

11 जनवरी को श्री लालबहादुर शास्त्री जी के पुण्यतिथि के अवसर पर

श्री लाल बहादुर शास्त्री जी

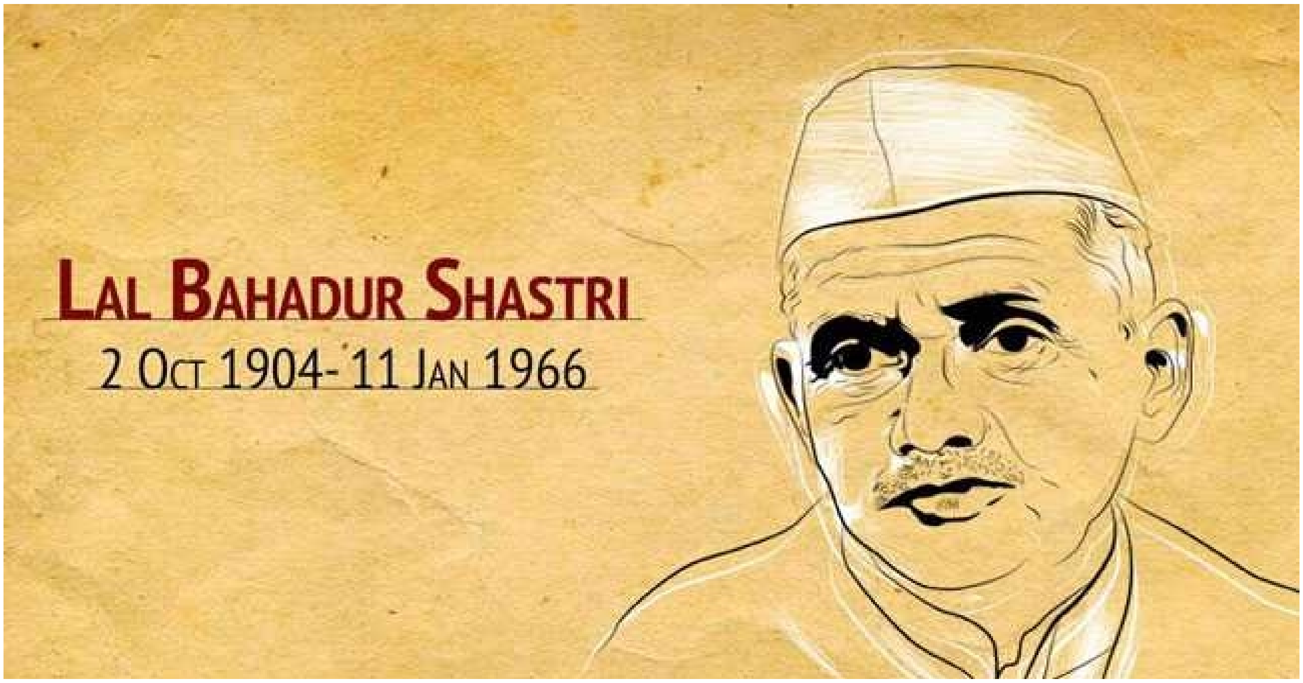

भारत माँ का वीर लाल वह,
लालबहादुर था अनुपम।
वामन मूर्ति कीर्ति गुंजित थी,
दसों दिशाओं में निरुपम।।
स्वभाव से वह सुमन मृदुल था,
किंतु वज्रा सम कठोर भी।
सज्जन हेतु साधु ही था पर,
कंपित रहते दुष्ट सभी।।....1

निरभिमान निस्पृह निर्लोभी,
जिसका स्वार्थ मात्र था देश।
परहित हेतु सदा तत्पर जो,
वहीं प्रकट होता आवेश।।

रहन सहन साधारण ही था,
किंतु असाधारण व्यक्तित्त्व।
वाणी में निश्चय में दृढ़ता,
और कार्य में पटु नेतृत्व।।....2

उसने अपने प्रखर तेज से,
अरि के छक्के छुड़ा दिये।
सारा राष्ट्र बना पथगामी,
उसके पीछे केतु लिये।।
हम सब सदा सदा नतमस्तक,
वे हैं हम सबके आदर्श।
पदचिन्हों पर उन्हीं चलेंगे,
और करेंगे जन उत्कर्ष।।....3

मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी
पूणे महाराष्ट्र

दिल कर रहा था पकड़ लूं उन लम्हों को

हां, वही रास्ता, स्कूल की वही फिज़ा,
देखते ही सारा मंज़र घूम गया..
आंखों के सामने एक बार फिर,
सब कुछ बदला सा लग रहा था..
मगर क्या सब वही था पहले जैसा?
स्कूल की हर वह जगह
जहां हमारा बचपन गुजरा,
देखकर आंखें नम सी हो गई..
वह हाल, वो क्लास रूम,
वो गर्ल्स रूम, वो खेल का मैदान,
मानो फिर से बुला रहा था...
एक बार फिर से उन सुनहरी
यादों में खो जाने के लिए..
हां उस कॉमन हॉल में भी हमने
एक बार चाय से भरे कुल्हड़ का लुत्फ लिया...
मगर क्या यह मुमकिन है कि हम
उस जगह के फिर से हो जाए.?
फिर वही क्लासरूम, फिर वही टीचर,
फिर वही दोस्तों का साथ मिले..?
शायद नहीं, अब चाह कर भी
यह नहीं हो सकता..
क्योंकि हमने मीलों का सफर तय कर लिया है..
दिल कर रहा था पकड़ लूं उन लमहों को,
और रोक लूं फिर ना वापस जाने के लिए..
मगर जिंदगी की कशमकश
और उलझनें,
हमें बार-बार याद दिला रही थी कि,
नहीं..
कि अब और यहां हमारा गुजर नहीं,
अब और हमारा यहां बसर नहीं..

कि अब यह हमारा दरो दीवार नहीं..
कि अब यह हमारा दरो दीवार नहीं..

■■

ग़ौसिया निशात
लखनऊ

नशा ना करना तुम यारो

नशा ना करना तुम यारो,सब कहते बड़ी बीमारी है।
जिसने किया नशा इस जग में,हर्सीं जिंदगी हारी है।।

गिरवी रख दिया हसीं आशियाँ,खेत क्यार भी छोड़े ना।
एक अभागिन रोज सिसकती, फिर भी बंधन तोड़े ना।।
गहने बेच दिए सारे, मंगलसूत्र की बारी है।
नशा ना करना तुम यारो,सब कहते बड़ी बीमारी है।।

लगा बिखरने हसीं आशियाँ, हसरत होती मर जाने को।
पड़ा बेवड़ा बीच सड़क पर,ठोकर मिलती खाने को।।
पर लब की प्यास बुझाने को,बोतल की फिर तैयारी है।
नशा ना करना तुम यारो,सब कहते बड़ी बीमारी है।।

बेटी का यौवन देख- देख के,ऐसी जगी हवस मन में।
शर्मो- हया त्याग दी सारी,आग लगी कैसी तन में।
दाग लगा दिया अपने खून पे,बन बैठा व्यभिचारी है।
नशा ना करना तुम यारो,सब कहते बड़ी बीमारी है।

लुटा दिया दारु में सब कुछ,बना भिखारी बैठा है ।
तलब लगी अब भी पीने की,ना जेब में कोई पैसा है।
भल मानुष ये कैसा,इसकी अकल गई सब मारी है।
नशा ना करना तुम यारो,सब कहते बड़ी बीमारी है।

नशा ना करना तुम यारो,सब कहते बड़ी बीमारी है।
जिसने किया नशा इस जग में, हर्सीं जिंदगी हारी है।।

सुन्दर लाल मेहरानियाँ

रातें हुईं पहाड़

सूरज जी हैं छुप गए, ले कुहरे की ओट ।
शीत लहर है कर रही, धीरे-धीरे चोट ।।
धीरे-धीरे चोट, ठंड अब विकट पड़ी है।
नखरे करती धूप, सिमट कर दूर खड़ी है ।
कह 'कोमल' कविराय, ओस से धुलते पंकज ।
निकलेगा यह हाय! न जाने कब तक सूरज ।।

मौसम बेदर्दी हुआ, हवा कँपाये हाड़ ।
दिन छोटे टीले हुए, रातें हुईं पहाड़ ।
रातें हुईं पहाड़, नहीं हैं कटतीं काटे ।
दिन में शीत समीर, लगता तड़-तड़ चांटे ।
कह 'कोमल' कविराय, विहग गाते हैं सरगम ।
कुहरा पाला ओस, हुआ है कैसा मौसम ।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

चाय और सृजन धर्मी

शहर से दूर
हरी भरी पहाड़ियों के बीच
झील के किनारे
नीम के पेड़ की छाया में
रखी बैंच पर
परिवार की चिंताओं से दूर
अदरक,लोंग,दालचीनी वाली
बेहतरीन
गरमा गरम चाय पीने का
आनंद लेने आ जाते हैं
साहित्य सृजन धर्मी लोग त
वे एकांत में बैठ करते है
अच्छी रचना सृजन के लिए
चिंतन
ताकि प्रकाशित हो सके
किसी लोकप्रिय पत्र-पत्रिका में
और पाठक भी ले सके
दिल से बेहतरीन सृजन के
पढ़ने का आनंद त
चाय की गुमटी वाला भी
होजाता है दिल से प्रसन्न
जब साहित्य सर्जन धर्मी
बोलते हैं
वाह भाई त
क्या चाय पिलाई है
मजा आगया त

■ ■

दिनेश विजयवर्गीय

तिल की गजक

सर्दियों में तिल खाना बहुत लाभदायक है। तिल, तनाव को कम करता है । मांसपेशियों को मजबूत बनाता है और तिल में मोनो-सैचुरेटेड फैटी एसिड होता है जो शरीर से कोलेस्ट्रोल को कम करता है।गजक अर्थराइटिस के मरीजों के लिए बेहद फायदेमंद साबित हो सकती है। तिल और गुड़ में मौजूद कैल्शियम हड्डियों को मजबूत करता है। तो आइए! आज के ज़ायके में गज़क बनाते हैं -

- तिल की गजक बनाने की सामग्री

- 200 ग्राम सफेद तिल
- 300 ग्राम गुड़
- 12-16 कटे हुए बादाम
- 12-15 कटे काजू
- 2-3 पिसी हुई इलायची
- 3 चम्मच घी
- तिल की गजक बनाने कि विधि

एक कढ़ाई में तिल डालें और लगातार चलाते हुए धीमी आंच पर सेक लें।

जब तिल अच्छी तरह भुन जाएं तो इन्हें एक प्लेट में निकाल कर ठंडा कर लें।

तिल ठंडे होने के बाद इन्हें मिक्सी में डालकर दरदरा पीस लें।

अब कढ़ाई में गुड़, पानी और थोड़ा सा घी डालकर आंच पर पकाएं और चाशनी तैयार कर लें।

चाशनी तैयार होने के बाद इसमें इलायची पाउडर और पिसे हुए तिल डालकर अच्छी तरह मिला लें।

अब एक प्लेट में थोड़ा सा घी डालकर उसे फैला लें और कटे हुए ड्राई फ्रूट्स डालें।

अब तयार किया हुआ तिल का मिश्रण थाली में डालकर बेलन की सहायता से जितना पतला हो सके उतना पतला बेल लें

अब चाकू से अपने मुताबिक इसके पीस काट लें।

जब यह मिश्रण ठंडा होकर कड़ा हो जाए तो इन्हें खाएं और बाकि गज़क को एयरटाइट डिब्बे में भरकर रख दें।

2021 की उपलब्धियां

साथियों! 26 जनवरी को हमारा गणतंत्र दिवस है और इस दिन आइये! हम विगत वर्ष की उपलब्धियों को याद करते हैं कि और क्या, क्या देश को अभी पाना शेष है।

साल 2021 की शुरुआत किसान आंदोलन की लपट और कोरोना के खिलाफ लड़ाई में भारत को मिली पहली स्वदेशी वैक्सीन एक महान उपलब्धि साबित हुई। लेकिन मार्च महीना आते-आते जिस तरह कोरोना की दूसरी लहर ने भयावह रूप लिया उसकी वजह से लोगों को तमाम तरह के कष्ट उठाने पड़े। यह साल लोगों की स्मृतियों में इसलिए भी रहेगा क्योंकि पहली बार ऑक्सीजन की कमी के चलते लोगों की असमय मौत हुई, यह साल इसलिए भी लोगों की स्मृति में रहेगा क्योंकि पहली बार गंगा किनारे लाशें बहती पायी गयीं, यह साल इसलिए भी लोगों की स्मृतियों में रहेगा क्योंकि पहली बार दवाओं की जमकर कालाबाजारी हुई।साल 2021 पहला ऐसा साल रहा जब सीबीएसई समेत तमाम बोर्डों की 10वीं और 12वीं कक्षा की परीक्षा रद्द हो गयीं और छात्रों को एक तय फार्मूले के तहत पास किया गया। साल 2021 में आयुर्वेद और एलोपैथ के बीच विवाद भी छिड़ा और चिकित्सा क्षेत्र में भारत की ताकत को पूरी दुनिया ने तब देखा जब यहां सबसे तेज गति से लोगों का

टीकाकरण हुआ। साल की शुरुआत में व्यस्कों के लिए दो कोरोना वैक्सीन आई थीं तो साल के अंत में 15 से 17 साल के बच्चों के लिए टीके और 60 साल से ऊपर के लोगों और स्वास्थ्य कर्मियों के लिए एहतियाती खुराक देने का ऐलान प्रधानमंत्री ने कर दिया। साल 2021 में दुनिया ने भारत की आर्थिक, सामरिक और राजनायिक शक्ति भी देखी।

कोरोना की दूसरी लहर के दौरान अर्थव्यवस्था की जो हालत बिगड़ी उसे बड़ी कुशलता के साथ दोबारा पटरी पर लाया गया और सिर्फ पटरी पर लाया ही नहीं गया सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था भी बनाया गया। इस साल भारत ने अपने रक्षा बेडे में और राफेल विमान जोड़े, रूस से एस-400 मिसाइल हासिल की, तीनों सेनाओं का तेजी से आधुनिकीकरण किया और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से कदम बढ़ाये तो राजनयिक दृष्टि से भारत इस मायने में सफल रहा कि एक ही समय में अमेरिका और रूस के साथ संबंध प्रगाढ़ हुए। अमेरिका में नये बाइडेन प्रशासन के साथ भारत ने करीबी रिश्ते बढ़ाये, स्वयं प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा बेहद सफल रही, चीन के साथ भारत ने कड़ाई बरतते हुए मुद्दे सुलझाने की दिशा में प्रगति हासिल की, अफगानिस्तान में हालात बिगड़ने पर वहां से समय रहते भारतीयों को निकाला और जो अफगान यहां आना चाहते थे उनकी भी मदद की। यही नहीं भारत ने तालिबान शासन के बावजूद अपना पड़ोसी धर्म निभाते हुए अफगान जनता को मदद करना जारी रखा। नेपाल के साथ इस साल भारत के संबंधों में बेहद सुधार आया। साथ ही भारत ने विभिन्न वैश्विक मुद्दों पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन अपने यहां भी आयोजित किये और बाहर आयोजित सम्मेलनों में भी हिस्सा लिया।

यह साल राजनीतिक रूप से भाजपा के लिए इसलिए ज्यादा फलदायी नहीं रहा क्योंकि पार्टी तमाम प्रयासों के बावजूद पश्चिम बंगाल में सफलता नहीं हासिल कर पाई लेकिन दूसरी ओर कांग्रेस के लिए भी यह साल निराशाजनक ही रहा क्योंकि विभिन्न चुनावों में उसे और नुकसान उठाना पड़ा। भाजपा के खिलाफ जो लोग इस साल प्रमुखता से मैदान में डटे रहे उनमें पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और किसान नेता राकेश टिकैत का नाम शामिल है। देखा जाये तो यह साल विभिन्न तरह की घटनाओं से भरा हुआ रहा लेकिन साल के अंत में उत्तर प्रदेश में इत्र कारोबारी के यहां आयकर विभाग के छापे के दौरान नोटों की जो बोरियां और कई किलो सोना बरामद हुआ है उसको देखकर सभी की आंखें चौंधियाई हुई हैं। आइये जरा एक नजर डालते हैं साल भर की बड़ी घटनाओं पर।

जनवरी-

1 जनवरी- भारत ने शुरू किया संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में गैर-स्थायी सदस्य के रूप में दो साल का कार्यकाल, ळ्न्एण् में फहराया तिरंगा

2 जनवरी- ३्ण्उ्ध्ने कोवैक्सीन और कोविशील्ड वैक्सीन को दी मंजूरी

4 जनवरी- व्हाटसएप ने भारत में नई प्राइवेसी पॉलिसी की घोषणा की जिस पर विवाद हो गया

12 जनवरी- सुप्रीम कोर्ट ने किसान आंदोलन के दौरान केंद्र सरकार के तीन कृषि कानूनों के क्रियान्वयन पर रोक लगाई

16 जनवरी- भारत में कोरोना रोधी टीकाकरण अभियान का शुभारंभ हुआ

22 जनवरी- प्रसिद्ध भजन गायक नरेंद्र चंचल का निधन

26 जनवरी- कोरोना महामारी को देखते हुए इस साल गणतंत्र दिवस समारोह में कोई विदेशी राष्ट्राध्यक्ष मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित नहीं हुआ

26 जनवरी- गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजपथ पर परेड में वायुसेना में शामिल किये गए राफेल लड़ाकू विमान ने पहली बार हिस्सा लिया

26 जनवरी- कृषि कानूनों का विरोध कर रहे किसानों का दिल्ली में ट्रैक्टर मार्च हिंसक हुआ। कई जगह प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़प हुई, प्रदर्शनकारियों ने सार्वजनिक संपत्ति में तोड़फोड़ की और लाल किले पर धार्मिक झंडा फहरा दिया।

फरवरी-

7 फरवरी 2021 को उत्तराखण्ड के चमोली जिले में बाढ़ और भूस्खलन से 38 लोगों की मृत्यु हो गयी और कई लोग लापता हो गये

14 फरवरी- किसानों के प्रदर्शन से जुड़ी 'टूलकिट' सोशल मीडिया पर साझा करने में संलिप्तता के आरोप में क्लाइमेट एक्टिविस्ट दिशा रवि को बेंगलुरु से गिरफ्तार किया गया। दिशा रवि को 23 फरवरी को दिल्ली की एक अदालत ने

जमानत दे दी।

24 फरवरी- अहमदाबाद के मोटेरा स्टेडियम का नाम बदल कर नरेंद्र मोदी स्टेडियम किया गया

मार्च-

20 मार्च- दत्तात्रेय होसबोले को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सरकार्यवाह चुना गया

26 मार्च- मुंबई के भांडुप में एक मॉल में चल रहे कोविड अस्पताल में आग लगने से 9 लोगों की मौत

27 मार्च- देश के विभिन्न राज्यों में कोरोना की दूसरी लहर को देखते हुए लॉकडाउन या अन्य प्रतिबंध लागू किये गये

अप्रैल-

1 अप्रैल- गुजरात विधानसभा ने लव जिहाद विरोधी कानून बनाया। इससे पहले साल 2020 में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश ऐसा ही कानून बना चुके थे।

3 अप्रैल- छत्तीसगढ़ के बीजापुर में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में 22 जवान शहीद हो गए

23 अप्रैल- मुंबई में विरार के अस्पताल में छ्ळ में तड़के 3 बजे लगी आग, 14 की जलकर मौत

23 अप्रैल- कोरोना के खिलाफ लड़ाई के दौरान लोगों का जीवन बचाने के लिए ऑक्सीजन सप्लाई हेतु रेलवे और वायुसेना ने झोंकी ताकत

24 अप्रैल- दिल्ली के जयपुर गोल्डन अस्पताल में ऑक्सीजन की कथित कमी से 25 कोरोना मरीजों की मौत हुई

27 अप्रैल- भारत में कोरोना से मरने वालों की संख्या दो लाख के पार हुई।

28 अप्रैल- असम समेत पूर्वोत्तर में भूकंप के तेज झटके, 6.4 रही तीव्रता, कई इमारतों में पड़ी दरार

30 अप्रैल- सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों और पुलिस को चेताया- 'नागरिक सोशल मीडिया और इंटरनेट पर अपनी शिकायत साझा करते हैं तो कार्यवाही ना हो'

मई-

1 मई- गुजरात के भरूच के कोविड अस्पताल में लगी आग, 12 मरीजों की मौत

2 मई- विधानसभा चुनाव परिणाम में पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, केरल में वाममोर्चा, असम में भाजपा, तमिलनाडु में द्रमुक गठबंधन और पुडुचेरी में एनडीए को सत्ता मिली।

2 मई- पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव परिणाम के बाद राज्य में राजनीतिक हिंसा भड़क उठी। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं की हत्या और उनके घर तोड़फोड़ की खबर आई।

4 मई- ट्विटर ने 'नफरती आचरण और अपमानजनक व्यवहार' नीति का उल्लंघन करने पर अभिनेत्री कंगना रनौत का अकाउंट स्थायी रूप से बंद कर दिया

5 मई- सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने मराठा आरक्षण को 50ङ सीमा से पार करने के चलते असंवैधानिक करार देकर रद्द कर दिया

6 मई- आरएलडी प्रमुख अजित सिंह का निधन

10 मई- बिहार के बक्सर में गंगा किनारे बह कर आईं कई लाशें, इसके बाद उत्तर प्रदेश के भी कई इलाकों में गंगा किनारे पर लाशें पाये जाने से राजनीति गर्माई

17 मई- चक्रवाती तूफान तौकाते ने महाराष्ट्र और गोवा में मचाई तबाही। 90 लोगों की मौत

21 मई- महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में सुरक्षा बलों के अभियान के दौरान 13 माओवादी मारे गये।

23 मई- भगोड़े आर्थिक अपराधी मेहुल चोकसी को डोमिनिका में पकड़ा गया

25 मई- लक्षद्वीप के प्रशासक प्रफुल्ल कोडा पटेल के फैसलों के विरोध में प्रदर्शन शुरू हुए।

26 मई- चक्रवाती तूफान यास ने ओडिशा और पश्चिम बंगाल में मचाई तबाही

31 मई- केंद्र और राज्य सरकार के बीच टकराव को देखते हुए पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव अलपन बंधोपाध्याय ने इस्तीफा दिया

जून-

4 जून- दिल्ली हाईकोर्ट ने 5जी सेलुलर नेटवर्क के खिलाफ अभिनेत्री जूही चावला की याचिका खारिज करते हुए उन पर 20 लाख रुपए का जुर्माना लगाया।

7 जून- पुणे की केमिकल फैक्ट्री में आग लगने से 18 लोग मरे

13 जून- आप सांसद संजय सिंह ने आरोप लगाया कि श्री राम जन्मभूमि तीर्थ

क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से राम मंदिर निर्माण के दौरान भूमि खरीद में आर्थिक अनियमितताएं की गयीं।

17 जून- पिंजरा तोड़ संगठन की कार्यकर्ता नताशा नरवाल, देवांगना कालिता और आसिफ इकबाल तनहा को दिल्ली दंगा मामले में जमानत मिलने के बाद जेल से रिहा किया गया।

18 जून- भारतीय एथलीट मिल्खा सिंह का निधन

22 जून- दिल्ली में राकांपा नेता शरद पवार के घर राष्ट्र मंच संगठन के बैनर तले एक बैठक हुई जिसमें विपक्ष के कई नेताओं ने हिस्सा लिया और भाजपा विरोधी थर्ड फ्रंट बनाने पर चर्चा की।

23 जून- प्रवर्तन निदेशालय ने विजय माल्या, नीरव मोदी और मेहुल चोकसी की करीब 18,170.02 करोड़ रुपये की जो संपत्ति जब्त की थी उसमें से अधिकांश 9371.17 करोड़ रुपये की संपत्ति सरकार और सरकारी बैंकों को सौंप दी।

24 जून- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर के प्रमुख राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ बैठक की। इस बैठक में प्रधानमंत्री ने जम्मू-कश्मीर में जल्द चुनाव और राज्य का दर्जा बहाल करने का वादा दोहराया।

जुलाई-

4 जुलाई- पुष्कर सिंह धामी को उत्तराखण्ड का मुख्यमंत्री चुना गया।

5 जुलाई- भीमा कोरेगांव हिंसा मामले में जेल में बंद कार्यकर्ता स्टेन स्वामी का निधन

6 जुलाई- केंद्र सरकार ने बड़ा फैसला लेते हुए सहकारिता मंत्रालय का गठन किया

7 जुलाई- केंद्र की मोदी सरकार ने मंत्रिमंडल में बड़ा फेरबदल करते हुए 12 बड़े नेताओं को मंत्री पद से हटाया और 43 नये चेहरों को शामिल किया

7 जुलाई- प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता दिलीप कुमार का निधन

14 जुलाई- सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए कोरोना महामारी के बीच कांवड़ यात्रा को मंजूरी देने पर यूपी सरकार को फटकार लगाई

18 जुलाई- मुंबई में तबाही लाई बारिश, भूस्खलन के दो हादसों में 23 लोगों की मौत

18 जुलाई- इजराइल के न्एध समूह के पेगासस सॉफ्टवेयर से भारत के करीब 300 लोगों के मोबाइल नंबरों की जासूसी होने की रिपोर्ट सामने आने से हंगामा

19 जुलाई- पोर्नोग्राफी सामग्री बनाने के आरोप में अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी के पति राज कुंद्रा गिरफ्तार

20 जुलाई- सरकार ने संसद में एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि कोरोना की दूसरी लहर के दौरान ऑक्सीजन की कमी से किसी की मौत नहीं हुई

22 जुलाई- आयकर विभाग ने दैनिक भास्कर मीडिया समूह के परिसरों पर छापे मारे

24 जुलाई- टोक्यो ओलंपिक 2020 में भारत की वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने इतिहास रचते हुए सिल्वर मेडल जीता

25 जुलाई- तेलंगाना के वारंगल के पालमपेट में स्थित रामप्पा मंदिर को यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल के तौर पर मान्यता दी। रामप्पा मंदिर का निर्माण 13वीं शताब्दी में किया गया था।

26 जुलाई- बीएस येदियुरप्पा ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया

26 जुलाई- असम-मिजोरम सीमा पर हिंसक झड़प में 6 जवान शहीद

28 जुलाई- बासवराज बोम्मई कर्नाटक के नये मुख्यमंत्री बने

अगस्त-

1 अगस्त- बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु ने टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीता

1 अगस्त- दिल्ली में श्मशान घाट पर 9 साल की दलित बच्ची से बलात्कार के बाद पुजारी ने कथित रूप से किया जबरन अंतिम संस्कार

4 अगस्त- टोक्यो ओलंपिक में भारत की स्टार बॉक्सर लवलीना बोरहोगेन ने इतिहास रचते हुए देश को कांस्य पदक दिलाया

5 अगस्त- इस साल 5 अगस्त का दिन और भी यादगार बन गया। पुरुष हॉकी में टीम इंडिया ने शानदार खेल दिखाते हुए जर्मनी को कांस्य पदक मुकाबले में 5-4 से चित कर इतिहास रच दिया।

6 अगस्त- केंद्र सरकार ने राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार का नाम बदल कर मेजर ध्यान चंद खेल रत्न पुरस्कार कर दिया

7 अगस्त- टोक्यो में जेवलिन थ्रो के

फाइनल में नीरज चोपड़ा ने 87.58 मीटर के थ्रो के साथ भारत की झोली में पहला गोल्ड मेडल डाल दिया

10 अगस्त- ट्विटर ने नियमों के उल्लंघन के चलते राहुल गांधी, अजय माकन और रणदीप सुरजेवाला के अकाउंट को लॉक किया

11 अगस्त- संसद के मानसून सत्र का समय पूर्व समापन हुआ। सत्र के अंतिम दिन कुछ सांसदों और मार्शलों के बीच कथित झड़प ने संसदीय लोकतंत्र को शर्मसार किया।

15 अगस्त- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस समारोह में ओलंपिक खिलाड़ियों को आमंत्रित किया और लाल किले की प्राचीर से दिये अपने भाषण के दौरान उनकी प्रशंसा भी की।

21 अगस्त- राजस्थान के पूर्व राज्यपाल और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह का निधन।

23 अगस्त- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने राष्ट्रीय मौद्रिकरण पाइपलाइन (एनएमपी) का शुभारंभ किया। इसके जरिये अगले चार वर्षों में बेची जाने वाली सरकार की बुनियादी ढांचा संपत्तियों की सूची तैयार की गयी।

27 अगस्त- पूर्व सांसद और भाजपा नेता एल. गणेशन को मणिपुर का राज्यपाल बनाया गया।

28 अगस्त- हरियाणा के करनाल में आंदोलनकारी किसानों पर पुलिस लाठीचार्ज मामले से हुआ बड़ा राजनीतिक हंगामा। किसानों ने एसडीएम को निलंबित किये जाने तक धरना दिया।

28 अगस्त- सड़क परिवहन मंत्रालय ने भारत में वाहनों के पंजीकरण के लिए भारत श्रृंखला (ँ८) शुरू की

29 अगस्त- इस साल खेल दिवस तब खास बन गया जब टोक्यो पैरालंपिक में महिला टेबल टेनिस स्पर्धा के क्लास 4 फाइनल मुकाबले में भाविना पटेल ने रजत पदक जीतकर इतिहास रच दिया। वहीं, पुरुषों की ऊंची कूद टी-47 स्पर्धा के फाइनल में निषाद कुमार ने रजत पदक जीता। इसके कुछ ही देर के बाद पुरुषों की डिस्कस थ्रो एफ-52 फाइनल स्पर्धा में विनोद कुमार ने कांस्य पदक अपने नाम किया। इस तरह एक दिन में भारत के खाते में तीन पदक आए।

30 अगस्त- टोक्यो पैरालंपिक में एक दिन में भारत के खाते में चार मेडल आए। इनमें एक गोल्ड भी शामिल है जो भारत ने महिलाओं की निशानेबाजी में हासिल किया। अवनि लखेड़ा ने पैरालिंपिक 2020 में भारत को पहला गोल्ड दिलाया। उन्होंने महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग एप्ञ इवेंट में गोल्ड मेडल जीता। इसके अलावा सुंदर सिंह गुर्जर ने ब्रॉन्ज, योगेश कठुनिया ने पुरुषों की डिस्कस थ्रो इ56 में रजत पदक जीता। साथ ही सुमित अंतिल और देवेंद्र झांझरिया ने भी पदक जीते।

सितम्बर-

1 सितम्बर- अलगाववादी और हुर्रियत कांफ्रेंस के नेता सैयद अली शाह गिलानी का निधन

2 सितम्बर- अभिनेता सिद्धार्थ शुक्ला का हृदय गति रुकने से निधन

5 सितम्बर- गौतमबुद्ध नगर के जिलाधिकारी सुहास यतिराज ने टोक्यो पैरालंपिक्स में पुरुष सिंगल्स बैडमिंटन स्पर्धा एसएल-4 का रजत पदक जीतकर इतिहास रच दिया।

11 सितम्बर- विजय रूपाणी ने गुजरात के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया

13 सितम्बर- भूपेंद्र पटेल गुजरात के नये मुख्यमंत्री बने, उनकी कैबिनेट में किसी पुराने मंत्री को जगह नहीं मिली

16 सितम्बर- विराट कोहली ने छोड़ी टी20 टीम की कप्तानी

18 सितम्बर- अमरिंदर सिंह ने पंजाब के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया

20 सितम्बर- चरणजीत सिंह चन्नी ने पंजाब के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली

अक्टूबर-

2 अक्टूबर- शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान समेत 8 लोगों को एनसीबी ने एक क्रूज पर रेड के दौरान गिरफ्तार किया

3 अक्टूबर- उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टेनी के बेटे की कार से कुचल कर चार किसानों की मौत। इस दौरान भड़की हिंसा में चार अन्य लोग मारे गये।

8 अक्टूबर- टाटा समूह ने एयर इंडिया की खरीद की बोली जीती। 70 साल बाद एयर इंडिया टाटा समूह के पास लौटी।

16 अक्टूबर- भारतीय फुटबाल टीम ने आठवीं बार जीता सैफ कप, फाइनल में नेपाल को 3-0 से हराया।

16 अक्टूबर- केरल में भारी वर्षा

और भूस्खलन की वजह से 42 लोग मरे और 200 करोड़ रुपये की संपत्ति का नुकसान हुआ।

19 अक्टूबर- उत्तराखण्ड के कुंमाऊं क्षेत्र में भारी वर्षा और भूस्खलन की वजह से 64 लोगों की मौत

21 अक्टूबर- भारत ने 100 करोड़ कोविड-19 रोधी खुराक देने का रिकॉर्ड बनाया

27 अक्टूबर- सुप्रीम कोर्ट ने पेगासस जासूसी मामले की जाँच के लिए एक स्वतंत्र आयोग बनाया।

30 अक्टूबर- बॉलीवुड अभिनेता शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान के बेटे को जमानत मिली। मुंबई सेंट्रल जेल से 22 दिन बाद हुए रिहा।

नवंबर-

5 नवंबर- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उत्तराखंड के केदारनाथ धाम में आदि गुरु शंकराचार्य की 12 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया। साल 2013 में आई बाढ़ में आठवीं शताब्दी के आदि गुरु की प्रतिमा नष्ट हो गई थी, जिसे पुनर्निर्मित किया गया है।

19 नवंबर- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन के दौरान किसानों से माफी मांगते हुए तीन नये कृषि कानूनों को वापस लेने का ऐलान किया।

19 नवंबर- आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में भारी वर्षा से जनजीवन बेहाल। आंध्र के रायलसीमा में 29 लोग मरे।

25 नवम्बर - पीएम मोदी सीएम योगी द्वारा भारत के सबसे बड़े और दुनिया के चौथे सबसे बड़े ग्रेटर नोएडा में जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट का उद्घाटन।

दिसम्बर-

2 दिसम्बर- भारत में कोरोना के नये स्वरूप ओमीक्रॉन का पहला मामला सामने आया। कर्नाटक में दो मामले मिले।

4 दिसम्बर- भारतीय सेना की एक यूनिट की गलती से नगालैंड में 15 लोगों की मौत। यूनिट ने उग्रवादी समझ कर नागरिकों पर की कथित फायरिंग। भड़की हिंसा में एक सैनिक भी मारा गया।

8 दिसम्बर- चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ बिपिन रावत समेत 12 लोगों को ले जा रहा हेलिकॉप्टर कुन्नूर में दुर्घटनाग्रस्त। सभी का निधन।

8 दिसम्बर- बीसीसीआई ने विराट कोहली को हटा कर रोहित शर्मा को टीम इंडिया का कप्तान बनाया।

9 दिसम्बर- कृषि कानूनों का विरोध कर रहे किसानों ने अपना आंदोलन समाप्त करने का ऐलान किया।

11 दिसम्बर 2021 : एक साल बाद किसानों का आंदोलन समाप्त

13 दिसम्बर 2021 : हरनाज कौर संधू बनी मिस यूनिवर्स 2021

13 दिसम्बर 2021 : काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का उद्घाटन

यह तो रहा पिछला साल पर आज जनवरी 2022 है और इस समय यूपी में बच्चों को योगी जी द्वारा टेबलेट मिलने की खुशी है, वहीं श्रम कार्ड बनकर लोगों में हजार रूपये आने की उत्सुकता है और हो भी क्यों न क्योंकि यूपी में चुनाव हैं।

आखिर! क्यों नहीं चाहते विदेशी कोच, बजरंग और रवि

मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक

तोक्यो ओलंपिक कांस्य पदक विजेता बजरंग पूनिया विदेशी कोच के साथ विदेश में ज्यादा समय नहीं बिताना चाहते इसलिये उन्होंने 2024 पेरिस खेलों की तैयारी के लिये देश में भारतीय कोच के साथ अभ्यास करने का फैसला किया है। बजरंग ही नहीं बल्कि तोक्यो ओलंपिक के रजत पदक विजेता रवि ने भी भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) को बता दिया है कि वे विदेश के निजी कोच रखने के बजाय भारतीय प्रशिक्षकों के साथ अभ्यास करना पसंद करेंगे। बजरंग जार्जिया के शाको बेनटिनिडिस के साथ ट्रेनिंग करते थे जबकि रवि के पास रूस के कमाल मालिकोव थे, जिनके साथ भारतीय कोच भी छत्रसाल स्टेडियम में उनकी मदद करते थे। बजरंग बेनटिनिडिस के साथ संबंध खत्म करने के बाद विदेशी कोच ढूंढने की कोशिश कर रहे थे लेकिन उन्हें कोई कोच नहीं मिला। रूस में उनके मौजूदा अभ्यास शिविर के दौरान भी वह कोच ढूंढ रहे थे और 27 वर्षीय पहलवान के अनुसार कोई भी भारत आने को तैयार नहीं हुआ।बजरंग ने मास्को से पीटीआई से कहा, ''ये कोच चाहते थे कि मैं सत्र का कम से कम 80 प्रतिशत समय उनके देश में बिताऊं और यह शर्त मुझे स्वीकार नहीं थी। मैं आधा समय बिताने को तैयार था लेकिन कोई भी भारत आने को तैयार नहीं था इसलिये मैंने भारतीय कोच के साथ ट्रेनिंग करने का फैसला किया। '' उन्होंने कहा, ''मैं नहीं जानता कि उन्हें भारत आने में क्या परेशानी है। '' बजरंग से पूछने पर कि वह किस कोच के साथ अभ्यास करेंगे तो उन्होंने कहा कि अभी तय करना बाकी है। वह भारतीय रेलवे के साथ जुड़े हुए हैं तो उम्मीद है कि वह रेलवे का कोच रखेंगे। रवि ने हाल में अपने ट्रेनिंग सेंटर में अभ्यास शुरू किया था और उनके 'स्पारिंग' जोड़ीदार अरूण कुमार उनकी मदद कर रहे हैं। डब्ल्यूएफआई के सहायक सचिव विनोद तोमर ने कहा, ''रवि और अधिक ट्रेनिंग जोड़ीदार चाहता हैं। हम गोंडा में रैंकिंग सीरीज प्रतियोगिता के दौरान उसके वर्ग में किसी को देखेंगे। '' उम्मीद है कि दीपक पूनिया भी अपने लंबे समय के ट्रेनर वीरेंद्र कुमार के साथ ट्रेनिंग जारी रखने को तरजीह देंगे जिन्होंने दिल्ली के बाहरी इलाके मरमूरपुर में नया ट्रेनिंग केंद्र बनाया है। देश में कोविड-19 की तीसरी लहर आने का खतरा बना हुआ है तो डब्ल्यूएफआई को भी राष्ट्रीय शिविरों के लिये विदेशी कोच नियुक्त करने में मुश्किल हो रही है। तोमर ने कहा, ''कोई भी कोविड-19 के कारण भारत की यात्रा करने का इच्छुक नहीं है इसलिये हमारे भारतीय कोच के साथ ही फरवरी में राष्ट्रीय शिविर शुरू करने की उम्मीद है।

मालदीव में भारत-विरोधी आंदोलन?

दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत और दुनिया के सबसे नए लोकतंत्रों में से एक मालदीव के बीच संबंध छोड़े बिगड़ते दिखाई दे रहे हैं। मालदीव मेन लैंड इंडिया से लगभग 1200 किलोमीटर दूर है और भारत के केंद्र शासित प्रदेश लक्ष्यद्वीप से लगभग 700 किलोमीटर की दूरी पर है। जहां एक कैंपेन इन दिनों खूब सुर्खियों में है। एक हज़ार से ज़्यादा द्वीपों वाले मालदीव में विपक्ष समर्थित 'इंडिया आउट' कैंपेन हो रहा है। मालदीव में कई हफ्तों से भारत विरोधी प्रदर्शन चल रहे हैं और पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन के बरी होने से ये और तेज हो गए हैं। यामीन के बरी होने से मालदीव-भारत संबंधों पर असर पड़ने की उम्मीद थी, विशेष रूप से इन विरोधों के लिए उनके खुले समर्थन के संदर्भ में, जो 'इंडिया आउट' आंदोलन के तहत हो रहे हैं।भारतीय प्रायद्वीप तीन तरफ से समुद्र से घिरा है। इसके दक्षिणी क्षेत्र को देखें तो लक्ष्यद्वीप से नजदीक हजारों द्विपों से घिरा देश मालदीव है। इस पूरी कहानी के दो किरदार है। पहले का नाम है पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन और दूसरे किरदार वर्नातमान के राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह। अब्दुल्ला जिस पार्टी से संबंधित हैं उसका नाम पीपीएम है। 2013 से 2018 तक मालदीव के राष्ट्रपति रहने वाले यामीन मालदीव के 'इंडिया आउट' आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। यामीन का चीन प्रेम जगजाहिर रहा है। 2018 में

वह चुनाव हार गए था। बाद में उन्हें हवालेबाजी और एक अरब डॉलर के सरकारी धन का दुरुपयोग करने का दोषी पाया गया। इसके लिए 2019 में यामीन को पांच साल की सजा हुई थी। कोविड-19 के कारण उनकी जेल की सजा को घर में नजरबंदी में तब्दील कर दिया गया। यामीन के रिहा होने के कुछ ही दिन बाद 'इंडिया आउट' आंदोलन ने जोर पकड़ना शुरू कर दिया है।

विवाद -

मालदीव एक मुस्लिम बहुल राष्ट्र है जहां सुन्नी मुस्लिम बहुतायत में पाए जाते हैं। यामीन दो कार्ड खेलते नजर आ रहे हैं। धार्मिक और सुरक्षा की भावना को भड़का यामीन भारत के खिलाफ माहौल बनाना चाहते हैं। यामीन का कहना है कि हम भारत को यहां से निकलवाना चाहते हैं। मालदीव में भारत को लेकर प्रमुख विवाद भारतीय नौसेना के बेड़ों की मौजूदगी को लेकर है। वहां भारतीय नौसेना का एक डोर्नियर विमान और दो हेलीकॉप्टर हैं जो 200 यहां-वहां फैले छोटे द्वीपों से मुख्यतया मरीजों को इलाज के लिए अस्पतालों तक पहुंचाने का काम करते हैं। मालदीव में भारत विरोधी अभियानों की शुरुआत 2018 में हुई थी जब अब्दुल्ला यामीन ने अपने देश से भारत के सैन्य अधिकारी और उपकरणों को ले जाने को कहा था। मालदीव का तब कहना था कि अगर भारत ने इसे उपहार में दिया है तो इस पर पायलट भारत के नहीं बल्कि मालदीव के होने चाहिए। इस मुद्दे ने तब देश में खूब जोर पकड़ा था और लोग सड़कों पर उतर आए थे।

इब्राहिम की इंडिया फर्स्ट नीति

इब्राहिम सोलिह ने एक साक्षात्कार के दौरान भारत को लेकर जवाब में कहा कि हमारा विचार भारत फस्ट है। हर मसले में वो अन्य देशों के मुकाबले भारत को तरजीह देते हैं। एक प्रकार से कहा जाए तो सोलिह को भारत समर्थित नीतियों के लिए जाना जाता है। सोलिह ने भारत को अपना 'सबसे करीबी सहयोगी और विश्वसनीय पड़ोसी' बताया था। भारत के राजदूत मुनू महावर के एक कार्यक्रम में सोलिह के साथ नजर आने के बाद राष्ट्रपति की ओर से यह बयान जारी किया गया।

भारत के लिए क्यों अहम है मालदीव

मालदीव भारत के लिए हिंद महासागर में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण ठिकाना है। यह एक छोटा देश है लेकिन यहां के लोग राष्ट्रीय गौरव को बहुत अहमियत देते हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने मालदीव में लाखों डॉलर के कई निवेश किए हैं, जो देश के सबसे बड़े निवेशकों में से एक बन गया है। भारत के विदेश मंत्रालय ने 6 जनवरी को एक ब्रीफिंग में कहा, 'मालदीव के साथ भारत के संबंध समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं, घनिष्ठ और बहुआयामी हैं... मालदीव सरकार द्वारा इस साझेदारी की पारस्परिक रूप से लाभकारी प्रकृति की पुष्टि की गई है। भारत मालदीव के साथ अपने पारंपरिक रूप से मैत्रीपूर्ण संबंधों को गहरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि पीपीएम आगामी चुनावों में सत्ता में आती है, तो हो सकता है कि वे यामीन ने अपने पिछले कार्यकाल के दौरान जो किया, उसे दोहराने में सक्षम न हों। आखिरकार मालदीव को भारत से सहायता की आवश्यकता है। मालदीव सार्क का भी सदस्य है और खाड़ी देशों से ऊर्जा संसाधनों की सारी सप्लाई इसी के आसपास से होकर गुजरती है। इसलिए अमेरिका समेत कई पश्चिमी देश मालदीव को खासी अहमियत देते हैं। 2020 में अमेरिका ने मालदीव के साथ बड़ा रक्षा समझौता किया था जिसका भारत ने भी स्वागत किया था। ■■

प्रभास की फिल्म राधे श्याम की रिलीज डेट रूकी

देश में कोविड-19 महामारी की मौजूदा स्थिति के मद्देनजर अभिनेता प्रभास और अभिनेत्री पूजा हेगड़े की फिल्म 'राधे श्याम' की रिलीज की तारीख अनिश्चित काल के लिए टाल दी गई। यह फिल्म 14 जनवरी को रिलीज होने वाली थी। फिल्म निर्माताओं ने बुधवार को यह घोषणा की। ऐसी खबरें थीं कि कई भाषाओं में बनी इस फिल्म की रिलीज महामारी की वजह से टल सकती है।इस फिल्म का निर्देशन राधा कृष्ण कुमार ने किया है।वहीं इसकी रिलीज पर पहले से ही संकट के बादल मंडरा रहे थे क्योंकि शाहिद कपूर की फिल्म 'जर्सी' और एस एस राजामौली की फिल्म 'आरआरआर' की रिलीज भी ओमीक्रोन की वजह कोविड-19 के मामलों में वृद्धि को देखते हुए टाल दी गई थी। 'राधे श्याम' के निर्माण से जुड़ी यूवी क्रियेशन्स ने फिल्म की रिलीज टालने की घोषणा की। निर्माता ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से हर संभव कोशिश की गई लेकिन ओमीक्रोन स्वरूप के मामलों में वृद्धि की वजह से ऐसा लगता है कि बड़े पर्दे पर रिलीज के लिए और प्रतीक्षा करनी होगी। 'जर्सी' 31 दिसंबर को और 'आरआरआर' सात जनवरी को रिलीज होने वाली थी।फिल्म मेकर्स ने राधेश्याम की रिलीज पोस्टपोन होने की आधिकारिक घोषणा अपने ट्विटर हैंडल के जरिए करते हुए लिखा, 'हमें अपनी फिल्म क्षराधेश्याम की रिलीज को मौजूदा कोविड स्थिति के कारण स्थगित करना पड़ रहा है। आपके बिना शर्त प्यार और समर्थन के लिए सभी प्रशंसकों का तहे दिल से शुक्रिया।

कार्यालय नगर पालिका परिषद्, पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर, जनपद - चन्दौली।

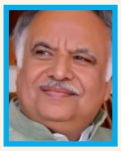

मा0 आशुतोष टन्डन जी
(नगर विकास मंत्री)

श्री संजीव सिंह
(जिलाधिकारी - चन्दौली)

स्वच्छ पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर
सुन्दर पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर

नगर पालिका परिषद, पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर जनपद, चन्दौली में
घर-घर में अमृत योजना के तहत पानी का कनेक्शन दिया गया है।

एक नया सवेरा लायेगें।
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर को स्वच्छ और सुन्दर बनायेंगे।

1- कूड़ा-करकट निर्दिष्ट स्थानों पर ही समय से फेकें तथा सफाई कार्य में नगर पालिका का सहयोग करें।
2- घर में जनित कूड़े को गीला व सूखा अलग अलग डस्टबीन में डाले।

'प्लास्टिक हटाये जीवन बचाये,
'धरती को स्वच्छ बनायें'

3- कर का भुगतान समय से करें।
4- नगर पालिका परिषद पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली में जल्द ही कर भुगतान की ऑनलाईनसुविधा कर दी जायेगी।
5- जन्म-मृत्यु का पंजीकरण अवश्य करायें।
6- वृक्षों की रक्षा करें।
7- पर्यावरण को स्वच्छ बनायें रखने हेतु वृक्ष लगाये व वृक्षों की देख-भाल करे।

'प्लास्टिक हटाओ'
'बिमारी भगाओं'

8- बिना मास्क पहनकर बाहन न निकले।
9- सेनिटाईजर का प्रयोग करें।
10- पालिथीन का प्रयोग न करें।
11- जन-जन तक संदेश पहुचाना है, पर्यावरण को बचाना है।

'सामाजिक दूरी बहुत जरूरी'
'कोरोना से रहेगी दूरी'

(कृष्ण चन्द्र)
अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका परिषद
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर
चन्दौली

समस्त सभासद गण
नगर पालिका परिषद
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर-चन्दौली

(सन्तोष खरवार)
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर
चन्दौली

RNI: UPHIN/2017/75716

SACH KI DASTAK

(A MONTHLY HINDI JOURNAL)
C-6/2-M, NEAR CHETGANJ THANA,CHETGANJ, VARANASI
Website : www.sachkidastak.com, E-mail : sachkidastak@gmail.com
Mob. : 8299678756, 9598056904

JANUARY, 2022
PRICE : RS. 20/-

EDITOR : BRAJESH KUMAR

NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA

विधानसभा 380 पं दीनदयाल उपाध्याय (मुगलसराय) के
सभी सम्मानित लोगो को
नव वर्ष, मकरसंक्रांति, गणतंत्र दिवस पर
हार्दिक अभिनंदन व शुभकामना

दीपक कुमार आर्या

पौत्र स्वर्गीय केदार नाथ वैध
नगर अध्यक्ष (पिछड़ा प्रकोष्ठ)
पं0 दीनदयाल उपाध्याय नगर, जिला चन्दौली
भारतीय जनता पार्टी